Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक

हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष-39 अंक-21
कल्पादि सम्वत् 1972949115

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 12 अगस्त से 18 अगस्त 2015 तक
श्रावण कृष्ण त्रयोदशी से श्रावण शुक्ल चतुर्थी सम्वत् 2072 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

याद करने की रस्म.. पृष्ठ- 3

गर्मियों में पेट.. पृष्ठ- 4

श्रीरामचरित मानस का... पृष्ठ- 5

HARNESSING HUMANISM.. पृष्ठ- 9

किस लड़ाई में फंस... पृष्ठ- 12

- क्या केन्द्रीय अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय को तुरन्त भंग कर देना चाहिए?
- आतंकियों से निबटने में न हो राजनीति
- शक्तिशाली होता भारत
- स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्यकार महिलाओं का योगदान, साहित्य मनीषी वीरांगनाएँ
- पाकिस्तान की नाकामी की खीझ

भारत और थाईलैंड नौसेना सहयोग बढ़ाने पर हुए सहमत

● संवाददाता ●

समुद्री सीमा साझा करने वाले भारत और थाईलैंड एक दूसरे की समुद्री सीमा जागरूकता को बढ़ाने के लिए नौवहन पर ऐसी सूचनाओं की पहचान की जिनका आदान प्रदान किया जा सकता है। साथ ही जहाज निर्माण परियोजनाओं में द्विपक्षीय सहयोग की संभावनाएं खंगालने पर सहमति व्यक्त की। रॉयल थाई नेवी के कमांडर इन चीफ एडमिरल क्रैशें चानसुवानित के न्यौते पर चार दिवसीय यात्रा पर आए नौसेना प्रमुख एडमिरल आर के धवन ने थाइलैंड सरकार और थाई सशस्त्र बलों के वरिष्ठ अधिकारियों से उच्च स्तरीय बातचीत की। दोनों पक्षों ने दोनों नौसेनाओं के शेष पृष्ठ 10 पर

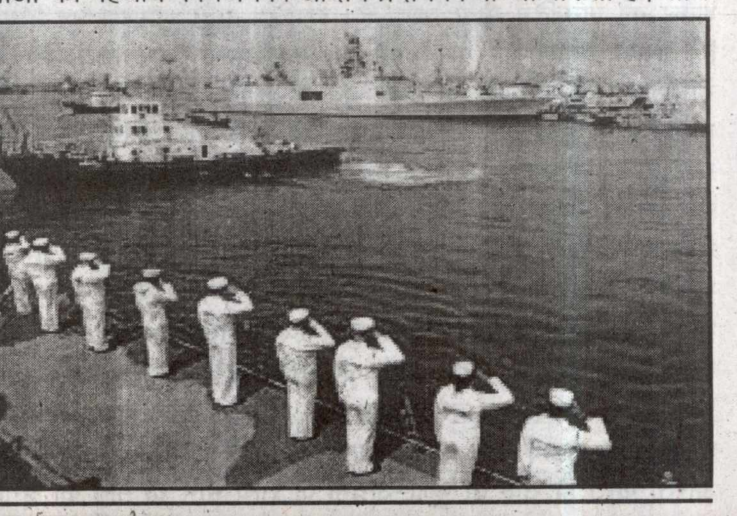

आईएसआईएस धीरे-धीरे भारत की ओर बढ़ रहा : सेना

अखिल भारत हिन्दू महासभा ने गृह मंत्रालय को सर्तक रहने को कहा

● संवाददाता ●

सेना के एक शीर्ष अधिकारी ने कहा कि जम्मू कश्मीर में आईएसआईएस की कोई बड़ी आहट नहीं है लेकिन संगठन इस तरफ धीरे–धीरे बढ़ रहा है और सुरक्षा ग्रिड को इस खतरनाक संगठन को देश में पांव पसारने से रोकना होगा। उत्तरी सैन्य कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल डीएस हुड्डा ने कई युवकों के आतंकवाद में शामिल होने पर भी चिंता जताई, लेकिन कहा कि यह संख्या इतनी बड़ी नहीं है कि जम्मू कश्मीर में सुरक्षा स्थिति को बदल सके। उन्होंने कहा कि जम्मू कश्मीर में आईएसआईएस की कोई बड़ी आहट नहीं है। हां, हमने झंडा लहराने की घटनाएं देखी हैं। यह चिंता का विषय है, हां यह है। क्योंकि आईएसआईएस एक ऐसी कट्टरपंथी विचारधारा और विचारों का संगठन है जिसके बारे में हमें सुनिश्चित करना होगा कि यह कोई प्रभाव स्थापित न कर पाए और लोकतंत्र में इसकी कोई जगह नहीं है। हुड्डा ने कहा कि इसलिए हमारे लिए यह विचार करने का कारण है कि इस वैचारिक युद्ध से कैसे लड़ा जाए। इसलिए हमारे लिए जो सुरक्षा से संबद्ध हैं और जो शासन से जुड़े हैं। हर किसी को एकजुट होना होगा तथा सुनिश्चित करना होगा कि यह खतरनाक संगठन भारत में पांव न पसार पाए। सैन्य कमांडर ने कहा कि क्षेत्र की ओर आईएसआईएस का बढ़ना चिंता का विषय है। उन्होंने कहा हम इसे क्षेत्र में आईएसआईएस की आहट धीमे–धीमे देख रहे हैं। हम इसे अफगानिस्तान में पहले ही देख चुके हैं। आईएसआईएस और अफगान तालिबान के बीच संघर्ष की कई घटनाएं हुई हैं। आईएसआईएस अफगानिस्तान में कुछ प्रभाव हासिल करने की कोशिश कर रहा है। हम पाकिस्तान में संचालित टीटीपी के कुछ गुटों को भी देख चुके हैं जिन्होंने शेष पृष्ठ 11 पर

शुभता का प्रतीक महाशिवरात्रि पर्व

भगवान शंकर के जन्मदिवस के रूप में मनाए जाने वाला धार्मिक पर्व **'महाशिवरात्रि'** हर्षोल्लास व धूमधाम से मनाया जाएगा। मान्यता है कि महाशिवरात्रि का दिन महाशुभ होता है इसलिए इस दिन से विभिन्न शुभ कार्यों की शुरुआत की जाती है। इनमें गृह प्रवेश, व्यवसाय आरंभ, विभिन्न निर्माण कार्य, **पूजा–पाठ** आदि कार्य संपन्न किए जाते हैं। ज्ञात हो कि प्रत्येक वर्ष के **फाल्गुन** कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को महाशिवरात्रि का पर्व मनाया जाता है। **इस दिन** मंदिर में भक्तिभाव से माँगा हुआ वरदान महादेव पूरा करते हैं। **महाशिवरात्रि** पर अपनी बुराइयों को त्याग कर अच्छाइयों को ग्रहण करने का पर्व माना जाता है। इस पर्व पर शिव की आराधना कर परेशानियों से छुटकारा पाया जा सकता है। इससे समस्त प्रकार की बाधाओं से छुटकारा मिलता है। भगवान शंकर ने समुद्र मंथन के पश्चात निकले विष को अपने कंठ में धारण किया था। इसलिए इस दिवस पर भगवान शिव के समक्ष अपने पापों को त्यागकर व मन की बुराइयों को भुलाकर अच्छी सोच विचार को अपनाना चाहिए। कहा जाता कि जब इस धरती पर चारों ओर अज्ञान **का अंधकार** छा जाता है, तब ऐसी धर्म ग्लानि के समय शिव का **दिव्य अवतरण** इस धरा पर होता है। वास्तव में फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी **को मनाया** जाने वाला महाशिवरात्रि का पर्व परमात्मा के दिव्य **अवतरण की** यादगार है। माना जाता है कि सृष्टि के प्रारंभ में इसी दिन **मध्यरात्रि** भगवान शंकर का ब्रह्मा से रुद्र के रूप में अवतरण हुआ था। प्रलय की वेला में इसी दिन प्रदोष के समय भगवान शिव तांडव करते हुए ब्रह्मांड को तीसरे नेत्र की ज्वाला से समाप्त कर देते हैं। इसीलिए इसे महाशिवरात्रि अथवा कालरात्रि भी कहा गया।

इस पर्व के लिए श्रद्धालुओं को कुछ खास नहीं करना पड़ता क्योंकि भगवान शिव बहुत भोले हैं सिर्फ मन से तैयार रहकर उपवास करते हैं। इस दिन उपवास करने से मन की मुराद पूरी होती है। युवतियों को मन के अनुरूप वर की प्राप्ति होती है। इस दिन भगवान शंकर का जन्मदिन माना जाता है। इसलिए रात्रि जागरण का नियम है। इससे मनोकानाएँ पूर्ण होती हैं। महाशिवरात्रि पर शिव लिंग व मंदिर में शिव को गाय के कच्चे दूध से स्नान कराने पर विद्या प्राप्त होती है। गन्ने के रस से स्नान करने पर लक्ष्मी प्राप्त होती है एवं शुद्ध जल से स्नान कराने पर सभी इच्छाएँ पूरी होती हैं। भगवान शिवलिंग पर बेलपत्र, अक्षत, दूध, फूल औल फल चढ़ाना चाहिए। शिवरात्रि पर शिव आराधना से समस्त मनोकामनाएँ पूरी होती हैं। इस दिन व्रत का महत्व बताया गया है। शिव पूजा में आंकड़े के फूल व बिल्व पत्र का भी महत्व शास्त्रों में है। थाली में कुंकू, हल्दी, गुलाल, अक्षत, जनेऊ के साथ अष्ट गंध या चंदन रखें। शिवलिंग को ॐ नमः शिवाय के उच्चारण के साथ जल चढ़ाकर पंचामृत अभिषेक करें। जल अर्पण कर कुंकू आदि चढ़ाएँ और आस्थानुसार भोग (बोर, मिठाई) अर्पण तथा आरती करें। हो सके तो पूजा–अर्चना के साथ भाँग या मावे का श्रृंगार भी करें।

मुन्ना कुमार शर्मा

साप्ताहिक राशिफल

मेष - इस सप्ताह गहरी विचारधारा व प्रेरणादायक कदम जीवन में एक सकारात्मक परिवर्तन करायेंगे। आपके मन में समाजवाद की भावना उत्पन्न हो सकती है जिसके फलस्वरूप मन चिन्तित रह सकता है। कुछ पारिवारिक मुद्दों पर संवेदनशील रहने की आवश्यकता है।

वृष - मन की भावनाओं में न बहकर दिमाग का उपयोग करें तो बेहतर परिणाम मिलेंगे। पितृ पक्ष से वैचारिक मतभेद होने की सम्भावना नजर आ रही है। कुछ लोगों का राजनैतिक लोगों से वाद–विवाद हो सकता है। किसी नये कार्य के प्रति सचेत व सजग रहने की आवश्यकता है।

मिथुन - सप्ताह क्रोध को अपने उपर हावी न होने दें अन्यथा बनी बनाई योजनाओं पर पानी फिरने के आसार नजर आ रहे हैं। छात्रों को अपने कीमती समय का सदउपयोग करने की आवश्यकता है। किसी के प्रति वह न करें जो आपको पसन्द न हों।

कर्क - इस सप्ताह आपको किसी नजदीकी व्यक्ति से पीड़ा मिल सकती है। सिंह का गुरू आपके दूसरे भाव में गोचर करेगा। धन की स्थिति बेहतर होगी। कुछ लोगों के ससुराल से रिश्ते मधुर होंगे। जरूरी कर्य स्वयं करें न कि दूसरों के सहारे रहें। सलाह और दवा बिना मांगे न दें।

सिंह - इस सप्ताह कुछ लोगों की अर्थ से जुड़ी समस्याओं का समाधान होने का समय आ गया है। प्रत्येक मिथक को तोड़ना आपका कर्तव्य है क्योंकि यह आपके लिए चुनौती है। कुछ लोगों के प्रति सहानुभूति रहेगी, यह आपका सकारात्मक पक्ष है।

कन्या - जिस कार्य के मार्ग में कठिनाईयां न आयें उसकी सफलता में संदेह करने करना चाहिए। आप सुख व शन्ति का अनुभव कर सकते हैं, बशर्ते आवश्यकताओं की प्राथमिकतायें सुनिश्चित करनी होगी। परिवार की दृष्टिकोण से आप में वह सब गुण विद्यमान है, जो एक सभ्य मनुष्य में होने चाहिए परन्तु आप भ्रमित है।

तुला - जिस कार्य के मार्ग में कठिनाईयां न आयें उसकी सफलता में संदेह करना चाहिए। आप सुख व शन्ति का अनुभव कर सकते हैं, बशर्ते आवश्यकताओं की प्राथमिकतायें सुनिश्चित करनी होगी।

वृश्चिक - विपत्तियां आपके धैर्य व साहस की परीक्षा लेने आती हैं। आप जिन वस्तुओं की जिन परिस्थितियों में इच्छा रखते हैं, उनका प्राप्त न होना विपत्ति है। विपत्तियां साहस के साथ कर्म क्षेत्र में बढ़ रहीं है, यह आपके लिए चुनौती का विषय है, उनसे घबरायें नहीं बल्कि उनका डटकर मुकाबला करें।

धनु - इस सप्ताह आप–अपनी समस्त शक्तियों को एकाग्र करके किसी भी क्षेत्र में कार्य करेंगे तो निश्चित रूप से संतोषजनक सफलता प्राप्त होगी। साथ ही शक्तियां और अधिक विकसित होंगी। व्यस्त व्यक्ति को अफसोस करने का समय नहीं मिलता है, वह प्रत्येक कार्य को उत्साह और समर्पण भाव से करता है।

मकर - इस सप्ताह कुछ लोगों को नयें अवसरों की तलाश में भटकना पड़ सकता है। जीवन की कोई भी साधना कठिनाईयों में होकर निकलने पर पूर्ण होती है। जरूरत इस बात की है, कि कसौटी पर सफल होने के प्रयास न छोड़ें। अपना संघर्ष जारी रखें।

कुम्भ - इस सप्ताह पुरानी समस्याओं के समाधान के लिए किसी अपने का सहयोग लेना पड़ सकता है। परिक्षा की अग्नि में तपकर ही आप शक्तिशाली, सौन्दर्युक्त और उपयोगी बन सकते हैं। धन आयेगा किन्तु उतनी ही तेजी से उसके व्यय होने के आसार हैं।

मीन - आप की इच्छा हो या न हो, जीवन में परिवर्तनशील परिस्थितियां आती रहेगी। आज उतार है तो कल चढ़ाव। समय का सद्पयोग करके आप हर चीज को हासिल करने का हुनर रखते हैं। अधिकार सम्पन्न व्यक्ति से मुलाकात होगी जो आपके भविष्य में उपयोगी साबित होगा।

पं० दीनानाथ तिवारी

''बचा लो खुद को''

बुद्धि की खट–पट
मन की उठा–पटक
हम कभी इधर कभी उधर
रहे जहां के तहां
कभी न पहुंचे
कहीं भी नहीं।
साधना पड़ता है
संभालकर
संतुलन से
और एक राह चलना होता है
मन–वचन–कर्म
से एक और इरादे नेक
बढ़ो, चलो, रुको मत
चलते रहो
रास्ता मिलता नहीं
तो रास्ता बनाओ
सत्य का सामना करें।
जिस कार्य से अन्दर आनंद हो
वही सही, करते रहो
जिस कार्य से क्षोभ हो मन में
वह गलत फौरन रुको
ये लड़ाई नहीं।
खेल नहीं
जीत–हार व्यर्थ है
ये जीवन है
यहाँ हार भी कभी जीत है
और जीत भी कभी हार है
मन को मनाओ। न माने तो
बांधों
बुद्धि की लगाम डालो
और करते चलो जनसेवा,
भलाई के कार्य
उमर पड़ी है जीवन संवारों
सुधारों और बचा लो। खुद
को।

देवेन्द्र कुमार मिश्रा

श्रीमद्भगवत गीता

त्रैगुण्यविज्ञयज्ञ वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन।
निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्।।

हे अर्जुन! वेद उपर्युक्त प्रकार से तीनों गुणों के कार्यरूप समस्त भोगों एवं उनके साधनों का प्रतिपादन करने वाले हैं, इसलिए तू उन भोगों एवं उनके साधनों में असाक्तिहीन, हर्ष–शोकादि द्वन्द्वों से रहित, नित्यवस्तु परमात्मा में स्थित, योग क्षेम को न चाहने वाला और स्वाधीन अन्तः करण वाला हो।।४५।।

यावानर्थ उदापने सर्वतः सम्प्लुतोदके।
तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः।।

सब ओर से परिपूर्ण जलाशय के प्राप्त हो जाने पर छोटे जलाशय में मनुष्य का जितना प्रयोजन रहता है, ब्रह्म को तत्त्व से जानने वाले ब्राह्मण का समस्त वेदों में उतना ही प्रयोजन रह जाता है।।४६।।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गऽस्त्वकर्मणि।।

तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसलिये तू कर्मों के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो।।४७।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 12 अगस्त से 18 अगस्त 2015 तक

अध्यक्षीय

याद करने की रस्म अदायगी

वर्ष १६६६ के कारगिल युद्ध के विजय दिवस के मौके पर पूरे देश ने रविवार को इस संघर्ष में शहीद हुए जवानों को याद किया। देश की जनता के साथ ही देश के नेताओं ने भी याद किया। हमारे पीएम मोदी ने इस मौके पर कहा कि कारगिल में हमारा हर जवान १०० से भी ज्यादा दुश्मनों पर भारी पड़ा। मै उन्हें सलाम करता हूं। एक बात तो है कि हमारे पीएम की बातों में दम है। वह अपनी वाकपटुता की कला से मुर्दे में भी जोश भर सकते हैं। लेकिन क्या जवानों व उनके परिवारों का सम्मान केवल बातों से ही किया जाना चाहिए। एक तरफ तो हमारे सैनिक अपनी मांगों को लेकर जंतर मंतर पर प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्हें अपनी मांगों को पूरा करने के लिए सड़क पर उतरना पड़ रहा है, जो हमारे लिए शर्म की बात है। वहीं दूसरी तरफ हमारे पीएम उन्हें सलाम कर रहे हैं, उनकी मांगें नहीं पूरी कर रहे हैं। केवल सलाम से काम नहीं चलेगा। अभी कुछ दिन पहले इंडिया गेट से सटे हुए प्रिंसेस पार्क में मोदी सरकार ने राष्ट्रीय युद्ध स्मारक बनाने का फैसला किया था। बीते लोकसभा चुनाव प्रचार के समय नरेंद्र मोदी ने दिल्ली में युद्ध स्मारक निर्माण का वादा किया था। वित्त मंत्री अरुण जेटली ने युद्ध स्मारक और संग्रहालय के लिए अपने पहले अंतरिम बजट में १०० करोड़ रुपये रखे भी थे, लेकिन उसके बाद क्या हुआ। किसी को इसकी जानकारी नहीं है। दरअसल, प्रिंसेस पार्क में भारतीय सेना के अधिकारियों के घर हैं। करीब १०–१२ एकड़ में फैला है यह क्षेत्र सरकार जब सैनिकों के लिए वन रैंक–वन पेंशन के वादे को लेकर गंभीर है, तो उसे युद्ध स्मारक को लेकर भी गंभीर रुख अपनाना चाहिए। शर्म की बात है कि स्वतंत्र भारत ने अपने वीर सैनिकों के लिए अभी तक कोई स्मारक नहीं बनाया है। भारत–चीन युद्ध के नायक रिटायर्ड कर्नल वीएन थापर का डबडबायी आंखों से कहना था कि अफसोस कि युद्ध के बाद शहीदों की कुबार्नी भुला दी जाती है। इस बात को लेकर जरूर सवाल उठना चाहिए कि युद्ध स्मारक बनाने का फैसला लेने में इतना वक्त क्यों लगा। पूछा जाना चाहिए कि जब एशियाई खेलों से लेकर राष्ट्रमंडल खेलों तक के आयोजन में भारी धनराशि खर्च हो सकती है, तो फिर शहीदों की याद में स्मारक बनाने के रास्ते में क्या चीज आड़े आ रही थी। हालांकि कुछ लोग युद्ध स्मारक को बनाने के पक्ष में नहीं हैं। उनका मानना है कि यह भारत का अमेरिकीकरण करने की दिशा में एक और कदम होगा। युद्ध स्मारक के दो पहलू हैं, शहीदों को याद रखना और युद्ध के विचार को जीवित रखना। ऐसे में युद्ध की विभीषिका के विचार को खत्म करना होगा। रणबांकुरों को लेकर सरकारों का रुख बेहद ठंडा रहा है। अफसोस है कि पाठ्यपुस्तकों में उन युद्धों पर अलग से अध्याय तक नहीं है। केवल विशेष मौकों पर जैसे कारगिल विजय दिवस, गणतंत्र दिवस और स्वाधीनता दिवस के मौके पर जवानों को याद करने की रस्मअदायगी हम जरूर कर लेते हैं। सबसे दुखद पहलू यह है कि अब सेना को नीचा दिखाने की चेष्टा हो रही है। कारगिल युद्ध के बाद राष्ट्रीय युद्ध स्मारक के निर्माण की मांग ने जोर पकड़ा था। हालांकि चीन के खिलाफ जंग के बाद भी स्मारक बनवाने की मांग हुई थी। पहले स्मारक को इंडिया गेट परिसर में बनी छतरी के पास ही बनाने की बात थी, सरकार का युद्ध समारक में ५० हजार शहीदों के नाम अंकित करने का प्रस्ताव है। अफसोस की बात है कि अंगरेजों ने विश्व युद्ध में शहीद भारतीय सैनिकों की याद में इंडिया गेट बनवाया। वहां सभी शहीदों के नाम अंकित हैं, पर हम अपने योद्धाओं के लिए स्मारक बनाने के लिए इतना वक्त ले रहे हैं। क्या मोदी सरकार वास्तव में अपने वादे को निभाने को लेकर गंभीर है। या फिर वह भी केवल मन की बात बनकर मन ही मे रह जायेगी।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

पाकिस्तान की नाकामी की खीझ

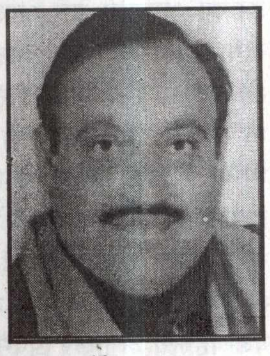

गुरदासपर के दीनानगर में सोमवार को हुए आतंकवादी हमले से यह बात जोर पकड़ने लगी है कि क्या पंजाब में आतंकवाद को फिर से पुनर्जीवित करने की कोशिश की जा रही है। सुरक्षा एजेंसियों का मानना है कि पाकिस्तान खालिस्तान समर्थक आतंकियों की मदद से राज्य में एक बार फिर आतंकवाद की चिंगारी भड़काने की कुचक्र रच रहा है। करीब एक दशक से ज्यादा समय तक आतंकवाद से पीड़ित रहे इस राज्य में इससे पहले बड़ा आतंकवादी हमला १६६५ में हुआ था जिसमें तत्कालीन मुख्यमंत्री बेअंत सिंह की जान गई थी। सवाल है कि अचानक से पंजाब को निशाना बनाने का कारण क्या हो सकता है। क्या पाकिस्तान जम्मू एवं कश्मीर के साथ–साथ अब पंजाब में भी मोर्चा खोलना चाहता है। गुरदासपुर में आतंकी हमला कारगिल विजय दिवस मनाए जाने के समय हुआ है। भारत के खिलाफ लड़े गए सभी युद्धों में हार की नाकामी एवं टीस पाकिस्तान को हर रोज परेशान करती है। वह भारत को घाव देने के लिए हमेशा ऐसे मौकों की तलाश में रहता है। दीनानगर में हमले के पीछे पाकिस्तान का हाथ है इस बात की पुष्टि मारे गए आतंकवादियों के पास से बरामद जीपीएस सिस्टम से हुई है। जीपीएस सिस्टम की फोरेंसिक जांच से यह बात सामने आई है कि आतंकवादी पाकिस्तानी इलाके शकरगढ़ के गहरोत गांव से हिंदुस्तानी सीमा के बामियाल में दाखिल हुए थे। यह अलग बात है कि हर बार की तरह पाकिस्तान ने इस बार भी हमले के पीछे अपना हाथ होने से इंकार किया है। दीनानगर जम्मू एवं कश्मीर के कठुआ जिले के काफी नजदीक है और यह रावी नदी के तट से जुड़ा हुआ है। सुरक्षा एजेंसियों को आशंका है कि पाकिस्तान में शरण लिए खालिस्तान समर्थक आतंकियों के उकसाने पर राज्य में सुप्त पड़े उनके समर्थक एक बार फिर अपना सिर उठा सकते हैं। पंजाब का बड़ा भू–भाग अंतरराष्ट्रीय सीमा के साथ लगा हुआ है। मानसून के समय सीमा पर लगाई गई बाड़ कई जगह कमजोर हो जाने से यहां घुसपैठ करना आसान हो जाता है। इसी का फायदा उठाकर ड्रग तस्कर आए दिन भारतीय क्षेत्र में दाखिल हो जाया करते हैं। पंजाब में ड्रग्स की तस्करी इन्हीं कमजोर रास्तों के जरिए होती रहती है। रूसी शहर उफा में पीएम मोदी और नवाज शरीफ के बीच हुई मुलाकात के बाद पाकिस्तान की तरफ से सीमा पर तनाव बढ़ाने की हर कोशिश की गई है। संघर्षविराम का उल्लंघन, घाटी में नागरिकों को निशाना बनाए जाने को लेकर पंजाब में आतंकी हमले को अंजाम दिया गया है। कुल मिलाकर पाकिस्तानी सेना और आईएसआई की यह कोशिश रही है कि उफा में दोनों प्रधानमंत्रियों ने अपने साझा बयान के जरिए आतंकवाद से निपटने के लिए जो इच्छाशक्ति जताई है उसे विफल कर दिया जाए। हालांकि, भारत ने स्पष्ट कर दिया है कि वह साझा बयान के आधार पर ही आगे बढ़ेगा। पाकिस्तान की खिसियाहट का एक कारण साझा बयान में कश्मीर मुद्दे का उल्लेख न होना भी हो सकता है। पाकिस्तान को यह अहसास बाद में हुआ कि उसने एक बड़ी कूटनीतिक गलती कर दी है। अब पाकिस्तान का सारा कुचक्र बातचीत शुरू करने की प्रक्रिया को पटरी से उतारने की हो सकती है। जम्मू एवं कश्मीर और पंजाब की हाल की घटनाओं को देखते हुए खुफिया एजेंसियों को पहले से ज्यादा सावधानी बरतने की जरूरत है।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

गर्मी के हादसों से निपटने के उपाय

राजधानी दिल्ली का तापमान मई के महीने में ही जब ४७ डिग्री सेल्सियस को पार कर गया तो आगामी दो माह में किन परिस्थितियों से गुजरना होगा, इसका अनुमान हम आसानी से लगा सकते हैं। इन दिनों जहाँ आकाश मार्ग से भगवान सूर्य गर्मी के अंगारों की वर्षा करते हैं वहीं मानव निर्मित साधन भी उसी के द्वारा जोड़े गए जन–धन को मिनटों में ही चट कर जाते हैं। लोग अपने जीवन की कमाई का एक बड़ा हिस्सा लगाकर अपने सपनों को पूरा करने हेतु जो भवन, फैक्ट्री, ऑफिस, गाड़ी या घर किसी तरह तैयार करते हैं वे जरा सी असावधानी से चंद मिनटों के मेहमान रह जाते हैं। इतना हो तब भी सहा जा सकता है किन्तु सम्पत्ति के साथ–साथ जब अनगिनत लोगों की जान भी चली जाती है तब पश्चाताप होता है कि काश! हमने भी सावधानी बरती होती तो शायद ये दिन हमें नहीं देखने पड़ते। जैसा कि हर वर्ष देखने में आता है, गर्मी ने दस्तक दी नहीं, कि जगह–जगह आग लगने का सिलसिला शुरू हुआ नहीं। इस बार भी गत २२ मई को ही राजधानी दिल्ली में एक ही दिन में तीन जगह आग लगी। लगभग चार दर्जन अग्नि शामक गाड़ियों (फायर टेंडर) ने घंटों जूझकर आग पर तो किसी तरह काबू पा लिया किन्तु जान–माल की हानि जो हुई क्या उसकी भरपाई कोई कर पाएगा? नहीं! किंतु, यदि हम तैयार हैं तो निश्चित रूप से इन हादसों को रोकने या उनका प्रभाव न्यूनतम करने में अपनी अहम भूमिका निभा सकते हैं। अपने रोजमर्रा की दिनचर्या में यदि हम कुछ भूलों, असावधानियों या लापरवाहियों पर काबू पा लें तो न सिर्फ अपने खर्चों में कटौती कर सकते हैं बल्कि अनेक बड़ी दुर्घटनाओं और शारीरिक कष्टों से आसानी से छुटकारा पा सकते हैं। इससे न सिर्फ हम स्वयं बल्कि अपने पड़ोसी को भी सुरक्षित जीवन दे सकते हैं:

१. बिजली के मेन स्विच, पैन्ट्री हीटर तथा अन्य ऐसे उपकरणों जिनसे आग लगने का खतरा हो, से कागज, प्लास्टिक, कपड़ा इत्यादि ज्वलनशील वस्तुओं को दूर रखें।

२. बिजली के लोड को निर्धारित सीमा (सेंक्शण्ड लिमिट में) रखें जिससे बिजली की फिटिंग, मीटर या सप्लाई लाइन पर अनुचित दबाव से होने वाले खतरों से बचा जा सके।

३. अपने प्रतिष्ठान या घर के बिजली की फिटिंग या वाइरिंग की समय पर जाँच करते रहें जिससे शार्ट सर्किट के कारण कोई हादसा न होने पाए।

४. अग्नि शमन यंत्रों (फायर फाइटिंग ईक्विपेंट्स) तथा प्राथमिक उपचार यंत्रों की क्षमता, अंतिम तिथि (एक्सपाइरी डेट) की नियमित जाँच करते रहें जिससे आपातकाल में वे काम आ सकें। इसके अलावा वहाँ रहने वाले या काम करने वाले व्यक्तियों को उन यंत्रों को चलाने का उचित प्रशिक्षण भी अवश्य दें जिससे किसी भी हादसे के समय उनका उपयोग किया जा सके। बड़ों के साथ–साथ आवश्यकतानुसार आग बुझाने के छोटे सिलेंडरों का भी प्रयोग करें।

५. भवन में कहीं भी जलती हुई बीड़ी, सिगरेट के टुकड़े या माचिस की तीली इत्यादि को न फेंकें। ऐसे स्थानों पर धूम्रपान पर पूर्ण प्रतिबंध हादसों को रोकने में सदा सहायक रहता है। एलपीजी, सीएनजी गैस या उसके सिलेंडरों का प्रयोग ऑफिसों में या तो बिल्कुल ना करें अन्यथा बहुत सावधानीपूर्वक नियत मानदंडों के अनुरूप ही करें।

६. आग लगने की स्थिति में लिफ्ट की सेवाएँ न लें तथा गीला रूमाल या कपड़े का प्रयोग करें जिससे साँस लेने में तकलीफ न हो।

७. सायंकाल अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठान को बढ़ाने (बन्द करने) से पूर्व यह सुनिश्चित कर लें कि वहाँ लगे कम्प्यूटर, यूपीएस, टीवी, एयर कंडीशनर, हीटर, फोटो कॉपीयर इत्यादि सब ठीक तरह से बंद कर दिए गए हैं।

८. ऑफिस, फैक्ट्री छोड़ने से पूर्व यह भी सुनिश्चित कर लें कि बिजली के सभी मेन स्विच ठीक से बंद हैं जिससे बिजली की अनावश्यक खपत पर भी अंकुश लगेगा और हमारी अनुपस्थिति में हो सकने वाली दुर्घटनाओं से भी मुक्ति मिलेगी। ठहरिये! उपर्युक्त को पढ़ने के बाद आपको शायद लग रहा होगा ये कोई नई बात नहीं है। इनको तो हम पहले से ही जानते हैं। इनमें नया क्या है किन्तु सावधान! पढ़ने और जानने के बाद कृपया अपने अंतरमन से यह पूछना न भूलें कि उपरोक्त में से कितनी बातों का पालन मैं स्वयं और मेरा परिवार, पड़ोसी, मित्र, सहकर्मी, कर्मचारी, बॉस या मालिक करता है अगर इनमें से कोई एक भी कमजोर कड़ी निकली, तो समझ लेना कि आप भी कम खतरे में नहीं हैं और आज (अभी) से ही आपको ये बातें पोलियो की खुराक की तरह सब को पिलानी पड़ेगी। तभी, हम सब भारतवासी गर्मी के भीषण हादसों पर रोक लगा कर सुरक्षित व समृद्ध भारत के निर्माण में अपना योगदान सुनिश्चित कर सकेंगे।

गर्मियों में पेट दुरुस्त रखते हैं ये घरेलू मसाले

गर्मियाँ शुरू होते ही अपच और उल्टी होना आम बात हैं चिलचिलाती धूप से बचने के लिए अक्सर हम बोतल बंद शीतल पेय का सहारा लेते हैं। मगर ये सिर्फ कुछ देर के लिए ही राहत पहुँचाते हैं। प्राचीन समय में आजकल की तरह बिकने वाले शीतल पेय का नामोनिशान नहीं था। फिर भी लोग स्वस्थ जीवन जीते थे। कारण सिर्फ इतना था कि वे प्राकृतिक पेय का उपयोग करते थे। ज्यादातर भारतीय रसोईघर में कई प्राकृतिक औषध उपलब्ध होते हैं। इनका इस्तेमाल प्राचीन समय से दवाइयों के रूप में किया जाता है। इन औषध के जूस को सब्जियों में डाला जाता है ताकि पाचन तंत्र सही रह सके। ऐसे ही कुछ प्राकृतिक औषध को अपने किचन में जरूर जगह दें ताकि इन गर्मियों में अपना पाचन तंत्र आपको परेशान न करे।

पुदीना–प्राचीन पाचकों में पुदीना ऐसा औषध है जिसका प्रयोग कई भारतीय व्यंजन में किया जाता है। पुदीने में कई गुण मौजूद हैं, जो हमें स्वस्थ रखते हैं। पुदीने को अदरक और नमक के साथ मिलाकर खाने से आपके भोजन का स्वाद बेहतर हो सकता है। यह गर्मी में उल्टी या मितली से भी राहत देता है। सब्जियों पर पुदीने को बारीक काटकर डालें। यह पाचन क्रिया को दुरुस्त करता है। गैस की समस्या भी दूर करने में पुदीना कारगर है। पुदीने की चटनी खाने से लगातार आ रही हिचकी में आराम मिलता है।

अजमोद (पारसले)–गर्मियों में ज्यादातर पेशाब में समस्या और संक्रमण आम बात है। ऐसी स्थिति में यह हर्ब संक्रमण रोकने में मदद करता है। यह गुर्दे में एसिड को संतुलित रखता है जिससे शरीर में सूजन और पानी जमा नहीं होता। यह हर्ब गुर्दे में पथरी बनने से भी रोकता है। पेशाब के प्रवाह को सामान्य बनाकर गुर्दे की रक्षा करता है।

तुलसी–तुलसी का पौधा हर भारतीय के घर में मिल जाता है। वैसे भी तुलसी का प्रयोग बेहद शुभ माना जाता है। पूजा–पाठ में काम आने वाली तुलसी सेहत के लिए अच्छी है। यह आपके सब्जियों के रस को और भी फायदेमंद बनाती है। तुलसी का पत्ता खाली पेट लेना बेहद फायदेमंद है। खासकर तब जब इसे नींबू और अदरक के साथ लिया जाए। यह पाचन क्रिया को दुरुस्त कर कब्ज में भी राहत देता है।

घृत कुमारी (एलोवेरा) –गर्मियों में चिलचिलाती धूप हमारी त्वचा को नुकसान पहुँचाती है। साथ में रैशेज भी हो जाते हैं। घृत कुमारी रस त्वचा पर लगाने से रैशेज में आराम मिलता है और यह त्वचा का तेजी से पुनर्निर्माण करता है। घृतकुमारी का रस आंतों और यकृत के लिए भी बेहद फायदेमंद है। यह शरीर के विषैले पदार्थ को बाहर निकालता है और पाचन क्रिया को भी दुरुस्त बनाता है।

दुग्ध रोम (मिल्क-थीसल)–इस औषध को सिलीमरीन भी कहा जाता है। यह यकृत को स्वस्थ रखते हैं और खून को साफ करने में मदद करता है। इसके सूखे पत्ते पेट के कीड़ों को दूर करता है। ज्यादा शराब का सेवन करने वालों को अक्सर यकृत की समस्या होती है। ऐसे में यह औषध फायदेमंद है। बहुत ज्यादा दर्द निवारक दवाइयों का इस्तेमाल करने वाले लोग इस हर्ब के साथ घृतकुमारी के रस का इस्तेमाल कर सकते हैं अपने यकृत को स्वस्थ रखने के लिए।

हल्दी–हल्दी हर घर में रोजमर्रा के खाने में इस्तेमाल होती है। हड्डियों की समस्या और जोड़ों के दर्द से बचाती है। अगर आप हल्दी को दवा की तरह इस्तेमाल करना चाहते हैं तो कच्ची हल्दी का टुकड़ा पीस कर दूध में मिलाकर रात में पीएं।

श्री रामचरित मानस का वैज्ञानिक स्वरूप

मनमोहन गोयल

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि, श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि, श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये।।

पिछले कुछ लेखों के माध्यम से मैंने प्रातः वन्दनीय आचार्य तुलसीदास जी द्वारा विरचित श्री रामचरित मानस के वैज्ञानिक स्वरूप की विवेचना कर यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि जो आज वैज्ञानिक खोजों द्वारा संसार में नित्य नया प्रकट हो रहा है वो सब और उससे भी आगे का वर्णन मानस में आचार्य तुलसीदास द्वारा ४३६ वर्ष पूर्व किया जाना यदि दैविक प्रेरणा अथवा दिव्य दृष्टि नहीं है तो और क्या है। इसी प्रकार के अनेकों सटीक वर्णन श्री रामचरित मानस को अप्रतिम बनाकर उसके वैज्ञानिक स्वरूप के औचित्य को सिद्ध करते हैं।

आज वैज्ञानिक तथा खगोलीय खोजों से सिद्ध हो चुका है कि ये जो जगत है इसके स्वरूप की व्यापकता की केवल कल्पना ही की जा सकती है। हमारे जैसे सौरमंडल का अस्तित्व तो जगत की व्यापकता में इतना क्षुद्र है कि जैसे सम्पूर्ण पृथ्वी पर पत्थर के एक छोटे टुकड़े जैसा नगण्य। जैसे समुद्र में एक रेत का कण।

आज यह सिद्ध है कि हमारे सौरमंडल जैसे अगणित छोटे–बड़े सौरमंडल आकाश गंगा में समाये हुए हैं और यह आकाश गंगा संभवतः एक बड़ी आकाश गंगा की छोटी धारा के समान है और उस बड़ी आकाश गंगा में छोटी–बड़ी अनेक आकाश गंगायें समाई हुई हैं और वो सब अपनी धूरी पर घूमती रहती हैं। इस प्रकार जगत की विशालता, व्यापकता और प्रसार की कल्पना भी अकल्पनीय है। जगत की विशालता का अनुभव करने मात्र से मन त्राहि माम त्राहि माम करने लगता है और उस प्रभु के स्वरूप में खो जाता है।

अब से लगभग ४०० वर्ष पूर्व एक इटेलियन खगोलिवद् गैलीलियो हुए हैं। उन्होंने सर्वप्रथम पाश्चात्य जगत में यह कहने का साहस किया कि पृथ्वी गोल है। उससे पहले मान्यता थी कि पृथ्वी सीधी है और सूर्य पूर्व में उगता है। शाम को पृथ्वी के चक्कर लगाता हुआ पश्चिम में डूब जाता है। अगले दिन फिर घूमकर पूर्व में आ जाता है। गैलीलियो को इसी खोज के कारण कि पृथ्वी गोल है और सूर्य पृथ्वी के चक्कर न लगाकर पृथ्वी सूर्य के चक्कर लगाती है इतना विरोध झेलना पड़ा कि जिसके परिणामस्वरूप गैलीलियो को फांसी दे दी गई।

आचार्य श्री तुलसी ने श्री रामचरित मानस में अनेक स्थानों पर इस सचराचर जगत को श्रीराम का स्वरूप माना है। श्री नारायण विष्णु और श्री राम एक ही हैं। हम सभी धर्म प्रेमी यह मानते हैं कि नारायण श्री हरि विष्णु क्षीरसागर में रहते हैं और आज का विज्ञान कहता है कि हमारी पृथ्वी एवं सौरमंडल एक गैलेक्सी का भाग है जिसे आकाश में देखा जा सकता है और उसे 'मिल्की वे' कहते हैं। क्योंकि चमकदार आकाश में नंगी आँखों से देखने पर यह गैलेक्सी एक बड़े रास्ते जैसी दीखती है। उसे मिल्की वे कहते हैं। क्षीर अर्थात दूध। क्षीर सागर तथा मिल्की वे में तो पूर्ण साम्य है। आज वैज्ञानिक खोजों से ऐसे तारामंडलों की खोज की जा रही है जिनकी दूरी पृथ्वी से कई हजार प्रकाश वर्ष दूर है। एक प्रकाश वर्ष में प्रकाश की गति ९४६०८०००००००० किलोमीटर अर्थात ९४ खरब किलोमीटर है। कई हजार प्रकाश वर्ष में तो यह दूरी किसी भी प्रकार की कल्पना से भी अधिक हो जायेगी। ऐसे तारामंडलों के अनेकों समूह आकाश गंगा अर्थात मिल्की वे अथवा क्षीरसागर में समाये हुए हैं। महाकवि संत तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में लगभग ४०० वर्ष पूर्व यूं तो कई स्थानों पर प्रभु श्रीराम के स्वरूप की व्यापकता का वर्णन किया है लेकिन दो स्थलों पर मेरी समझ में विशेष है। बालकांड में प्रभु श्रीराम के बाल्यकाल का वर्णन करते हुए कविवर लिखते हैं–

दिखरावा मातहि निज अद्भुत रूप अखंड।
रोम रोम प्रति लागे कोटि कोटि ब्रह्मंड (२०१)
बालकांड

इसी दोहे की चौपाईयाँ इस प्रकार हैं–

अगणित रवि ससि सिव चतुरानन,
बहु गिरि सरित सिंधु महि कानन। (२०१)

प्रभु श्रीराम के मुख मात्र में अगनित लोकों के दर्शन कौशल्या जी ने किये।

दूसरा वर्णन उत्तरकांड के ७९वें दोहे की चौपाईयाँ–

उदर माझ सुनु अंडज राया।
देखेएं बहु ब्रह्माण्ड निकाया।।
अति बिचित्र तहं लोक अनेका।
रचना अधिक एक ते एका।।
कोटिन्ह चतुरानन गौरीस।
अगनित उडगन रबि रजनीसा।।
सागर सरि सर बिपिन अपारा।
नाना भांति सृष्टि बिस्तारा।।
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किन्नर।
चारिं प्रकार जीव सचराचर।।

दोहा–

जो नहि देखा नहि सुना,
जो मनहुं न समाई।
सो सब अद्भुत देखेउं बरनि कवि बिधि जाई।। ८० (क)।।
एक एक ब्रह्माण्ड महु रहउं बरष सत एक।
एहि बिधि देखत फिरउं मैं अंड कटाह अनेक।। ८० (ख)।।

कवि श्रेष्ठ लिखते हैं कि कोशलपति भगवान के बाल स्वरूप में काकभसुंड जी, भगवान श्रीराम के बाल्यकाल में उनके मुख से होते हुए उनके उदर में चले गये और वहाँ ब्रह्माण्डों के समूहों को देखा। विचित्र प्रकार के अनेक लोक देखे और अनेकों प्रकार से सृष्टि का विस्तार देखा। अनेकों धरतियाँ, समुद्र, नदियाँ, पहाड़, जीव इत्यादि सब भिन्न–भिन्न प्रकार के देखे। यही आज का विज्ञान कहता है कि हर ग्रह की संरचना, अर्थात वहाँ की मिट्टी, जलवायु, नदियाँ, पहाड़, सागर इत्यादि भिन्न–भिन्न प्रकार के हैं। जिन ग्रहों पर जीवों की सम्भावना है, निश्चय ही शेष पृष्ठ 11 पर

शिवरात्रि व्रत धर्म का उत्तम साधन

शिवरात्रि का व्रत सबसे अधिक बलवान है। भोग और मोक्ष का फलदाता शिवरात्रि का व्रत है। इस व्रत को छोड़कर दूसरा मनुष्यों के लिए हितकारक व्रत नहीं है। यह व्रत सबके लिए धर्म का उत्तम साधन है। निष्काम अथवा सकाम भाव रखने वाले सांसारिक सभी मनुष्य, वर्णों, आश्रमों, स्त्रियों, पुरुषों, बालक–बालिकाओं तथा देवता आदि सभी देहधारियों के लिए शिवरात्रि का यह श्रेष्ठ व्रत हितकारक है। शिवरात्रि के दिन प्रातः उठकर स्नानादि कर शिव मंदिर जाकर शिवलिंग का विधिवत पूजन कर नमन करें। रात्रि जागरण महाशिवरात्रि व्रत में विशेष फलदायी है। गीता में इसे स्पष्ट किया गया है–

या निशा सर्वभूतानां तस्या जागर्ति संयमी।
यस्यां जागृति भूतानि सा निशा पश्चतो सुनेः।।

तात्पर्य यह कि विषयासक्त सांसारिक लोगों की जो रात्रि है, उसमें संयमी लोग ही जागृत अवस्था में रहते हैं और जहां शिव पूजा का अर्थ पुष्प, चंदन एवं बिल्व पत्र, धतूरा, भांग आदि अर्पित कर भगवान शिव का जप व ध्यान करना और चित्त वृत्ति का निरोध कर जीवात्मा का परमात्मा शिव के साथ एकाकार होना ही वास्तविक पूजा है। शिवरात्रि में चार प्रहरों में चार बार अलग–अलग विधि से पूजा का प्रावधान है। महाशिवरात्रि के प्रथम प्रहर में भगवान शिव की ईशान मूर्ति को दुग्ध द्वारा स्नान कराएं, दूसरे प्रहर में उनकी अघोर मूर्ति को दही से स्नान करवाएं और तीसरे प्रहर में घी से स्नान कराएं व चौथे प्रहर में उनकी सद्योजात मूर्ति को मधु द्वारा स्नान करवाएं। इससे भगवान आशुतोष अतिप्रसन्न होते हैं। प्रातःकाल विसर्जन और व्रत की महिमा का श्रवण कर अमावस्या को निम्न प्रार्थना कर पारण करें।

संसार क्लेश दग्धस्य व्रतेनानेन शंकर।
प्रसीद समुखोनाथ, ज्ञान ष्टि प्रदोभवद्द

तात्पर्य यह कि भगवान शंकर! मैं हर रोज संसार की यातना से, दुखों से दग्ध हो रहा हूं। इस व्रत से आप मुझ पर प्रसन्न हों और प्रभु संतुष्ट होकर मुझे ज्ञान दृष्टि प्रदान करें। **ॐ नमः शिवाय** कहिए और देवादिदेव प्रसन्न होकर सब मनोरथ पूर्ण करेंगे। शिवरात्रि के दिन शिव को ताम्रफल (बादाम), कमल पुष्प, अफीम बीज और धतूरे का पुष्प चढ़ाना चाहिए एवं अभिषेक कर बिल्व पत्र चढ़ाना चाहिए।

वीरेश त्यागी

सत्यमेव जयते

Government of India

Ministry of Minority Affairs

हिन्दू–विद्वेषी तत्वों की नई भयावह गोलबन्दी

क्या केन्द्रीय अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय को तुरन्त भंग कर देना चाहिए?

✍ हरिकृष्ण निगम

अभी हाल के प्रमुख अंग्रेजी समाचार पत्रों व टी.वी. चैनलों, १८ जनवरी २०१५ में एक फिल्मी पटकथा जैसी विले पार्ले के एक ए.टी.एम. में पैसा रखने वाली गाड़ी में बैंक के एक विश्वस्त कर्मचारी ने दो करोड़ की डकैती साथ के सशस्त्र सुरक्षाकर्मियों को जहरीला खाना खिलाकर दिनदहाड़े की, और फरार हो गये। सामान्यतः उस डकैती के सरगना का उपलब्ध नाम, उसकी पृष्ठभूमि आदि हमारे अंग्रेजी भाषा के खोजी पत्रकारों में समानान्तर तुरन्त प्रकाशित करने की प्रथा है पर क्योंकि उसका नाम स्पष्ट रूप से मुस्लिम था इसलिए उसके बारे में 'टाइम्स ऑफ इंडिया' जैसे बड़े पत्रों में कदाचित यह देने की जरूरत ही नहीं महसूस हुई। यह सैकड़ों बार उदाहरणों से विश्व भर के मीडिया विशेषज्ञ व बुद्धिजीवी सिद्ध कर चुके हैं, जिनमें विशेषकर 'न्यूज कार्य', 'न्यूयार्क' एवं प्रख्यात 'वाशिंगटन पोस्ट' भी सम्मिलित है कि भारत के कथित उदारवादी व बुद्धिजीवी हिन्दू धर्म के हर कथित कट्टरवादी आचरण को पुरानी औपनिवेशिक दृष्टि के रंग में चटपटे समाचार की तरह उछालते हैं पर मुस्लिम धर्मान्ध के मानवद्रोही, असहिष्णु तर्कों या आतंकवादियों के बचाव के लिए भी जो मुद्रा अपनाते हैं वह शर्मनाक लगती है। आज एक स्वतंत्र, निष्पक्ष जाँच एजेंसी का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गठन अपेक्षित है जिसके दायरे में चाहें राजनीतिबाज हों, धार्मिक नेता व कथित उदारवादी बुद्धिजीवी हों उनकी घृणा व जाति–धर्म की विद्वेषी टिप्पणियों का खुलासा कर सामान्य जनता को अवगत कराना भी आवश्यक है। मात्र वोट बैंक राजनीति के दबावों का तर्क उनकी अक्षम्य भूलों पर परदा नहीं डाल सकता है। वस्तुतः लाखों–करोड़ों लोगों द्वारा श्रव्य, दृश्य व मुद्रित मीडिया उनकी घृणा का प्रदर्शन देखने वालों को मूर्ख समझकर उसको नकारता या ढोंगी क्षमा माँगने वालों पर यदि आवश्यक हो तो स्वतः संज्ञान लेकर यदि सत्ता या पदवीधारी व्यक्ति हों तो भी उन पर महाअभियोग तक की न्यायिक प्रक्रिया सीमित समय के भीतर पूरी करनी चाहिए। विशेषकर जब शत्रु देश पाकिस्तान या चीन के भारतीय प्रवक्ता जो इस देश के मीडिया में हर प्रकरण में वे तथ्य छापते हैं जो उनके हाथ में प्रबल हथियार होते हैं और उन्हें अपने देश पर थूकने या तमाचा जड़ने में मदद करते हैं। उनका भी भण्डाफोड़ होना चाहिए। साहित्य महोत्सवों के नाम पर जयपुर, दिल्ली, मुम्बई आदि बड़े शहरों में आयोजित छोटे–बड़े लेखकों व पत्रकारों की चर्चित "जम्बोरियों" में एक फैशन सा बना हुआ है कि जो भी लेखक यह घोषणा करता है कि हिन्दू आस्था कोई धर्म नहीं है, वह सिर्फ एक जीवनशैली है, भारत में राष्ट्रवाद अंग्रेजों की देन है अथवा हिन्दू धर्म को आज के हिन्दुत्ववादी संगठनों से खतरा है क्योंकि वे देश की विविधता और समरसता के शत्रु हैं आदि–आदि उसकी अनुगूंज लम्बे समय तक अंग्रेजी पत्रों के अधिकांश सम्पादकों व लेखकों का एक व्यसन जैसा प्रदर्शित होता रहता है।

वे बड़ी से बड़ी घटनाएँ जा अमेरिकी व पश्चिमी देशों में भी प्रकाशित होती रहती हैं उनको यहाँ "ब्लैक आउट" किस मन्तव्य से किया जाता है उस रहस्य का पर्दाफाश कभी नहीं होता है। कुछ दिनों पहले कई भारतीय मूल के अर्चविशप एवं कार्डिनलों तक के "यौनाचरण के मानवभक्षी" सेक्स प्रिडेटर्स रूपों के विवरण ईसाई देशों तक में प्रकाशित होते थे पर तथाकथित सेकुलर देश में उनके बारे में कोई भी सन्दर्भ देते ही उनकी घिग्गी बंध जाती थी। कोटा स्थित इमैनुअल मिशन चर्च के आर्च बिशप एन. ए. थामस को 'हकीकत' नामक घृणा फैलाने वाली पुस्तक और अन्य अपराधों के लिए न्यायालय तक ने अपराधी घोषित किया था तब उनके बचाव में पी.यू. सी.एल. पीपुल्स यूनियन फार सिविल लिबर्टीज, पी.यू.डी.आर. पीपुल्स यूनियन फॉर डेमोक्रेटिक राइट्स और सभी कांग्रेसी व साम्यवादी बुद्धिजीवी एकजुट होकर देशव्यापी प्रचार में लग गए थे। निन्दात्मक साहित्य के धृष्टतापूर्ण प्रचार में जिनका मन्तव्य बलात या प्रलोभन द्वारा धर्मान्तरण होता है वे हर बार यही रट लगाते हैं कि अमुक पुस्तक केरल या मुम्बई, या जबलपुर में पूर्व प्रकाशित एवं उपलब्ध पुस्तक का हिन्दी या अंग्रेजी अनुवाद है। इस तरह की भ्रम फैलाने वाली तकनीकों पर या हिन्दू आस्था पर विषवमन की प्रकृति पर सैकड़ों उदाहरणों पर एक स्वतंत्र ग्रंथ लिखा जा सकता है। काश! सच का यह ज्ञान विशेष रूप से अंग्रेजी भाषा से परिचित भारतीय नवयुवकों को होता। जब से पूर्व प्रधनमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह ने ६ दिसम्बर २००६ को यह विस्मयजनक घोषणा की थी कि देश के संसाधनों पर मुसलमानों का पहला दावा है सरकार का अल्पसंख्यक मंत्रालय आज भी इस वर्ग के लिए नई–नई योजनाएँ कार्यान्वित करने में जुटा है। वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की चर्चित घोषणा कि कोई भी भारतीय मुस्लिम आतंकवादी नहीं होता, वे तो सिर्फ पाकिस्तान द्वारा भेजे जाते हैं और "होमग्रोन टेररिस्ट" हमारे देश में नहीं हैं, इन निर्णयों पर सरकारी ठप्पा लग चुका है। देश के हर फूड कोर्ट या मॉल या स्टोर में 'धूम्रपान निषेध' की तरह हलाल मांस उपलब्ध/अनुपलब्ध प्रदर्शन करना वैधानिक चेतावनी आवश्यक होगी, इस्लामी बैंकिंग, इस्लामी इन्डेक्स, स्टॉक एक्सचेंज, भारतीय मानक समय के साथ "मक्का टाइम" भी एक यथार्थ होगा। क्या हमें ज्ञात है कि मुस्लिमों की शिक्षा के सबलीकरण के तहत निम्नलिखित योजनाएँ आज भी चालू हैं– **ओ.एस.एम.एस. ऑनलाइन स्कालरशिप मैनेजमेंट सिस्टम,** डी.बी.टी. आधार नम्बर के बल पर डायरेक्ट बेनेफिट ट्रांसफर, दसवीं कक्षा तक प्रि–मैट्रिक छात्रवृत्ति, एन.एम.डी. एफ.सी., नेशनल माइनोरिटीज डेवलपमेंट एण्ड फाइनेन्स कार्पोरेशन के तहत ३ प्रतिशत ब्याज पर शिक्षा ऋण, प्रोस्ट–मैट्रिक स्कालरशिप, मेरिट कम मीन्स स्कालरशिप, फ्री कोचिंग, मौलाना आजाद राष्ट्रीय छात्रवृत्ति और मौलाना आजाद एजुकेशन फाउंडेशन की छात्रवृत्तियाँ। इन सब एक वर्ग को लाभकारी योजनाओं प्रदान करने के साथ यह भी अलिखित आदेश है कि आम मुसलमानों को देश के हर शिक्षण संस्थान में प्रवेश या नौकरियों में प्राथमिकता दी जाए और न्यूनतम अर्हता के नाम वह पद भरा न जाए। क्या यह सारी योजनाएँ उन सभी प्रान्तों या क्षेत्रों में हिन्दुओं को मिल सकेगी जहाँ वे अल्पसंख्यक के रूप में आज भी वर्गीभूत या घोषित हैं?

सेकुलरवादी ढोंग आज भी अपनी सीमाओं का अतिक्रमण कर रहा है जब हमारा अंग्रेजी मीडिया कभी वाल्मीकि सम्प्रदाय, कभी इक्का–दुक्का कथित दलित हिन्दू नेताओं के विवाद वक्तव्यों को अपने प्रथम पृष्ठ में सुर्खियों में बड़े शीर्षकों से प्रकाशित करता है और हिन्दुओं के बलात धर्म परिवर्तन को अनदेखा कर 'घर वापसी' के दशकों पुराने शुद्धिकरण कार्यक्रम का मखौल उड़ाता है। क्या हम भूल गए हैं कि किस तरह समाजवादी दल के उत्तर प्रदेश के नेता हाजी मोहम्मद याकूब कुरेशी, लखनऊ के फिरंगी हमले टकसाल के काजी मौलाना इरफातुल हलीम, आंध्रप्रदेश के सैयद अहमद कादरी, अफसर खान, मोउज्जम खान, सुल्तान ओवैसी, असादुद्दीन ओवैसी या ऑल इण्डिया इत्तेहाद मिल्लल काउंसिल के नेता तकी रजा खान आदि ने चाहे डेनमार्क के कार्टूनिस्ट हों या तस्लीमा नसरीन हों उनकी हत्या के फतवे जारी कर करोड़ों के पुरस्कारों की घोषणा की थी पर हमारे सेकुलरवादी प्रसिद्ध पत्रकार जैसे राजदीप सरदेसाई, दिलीप पाडगांवकर, बरखा दत्त, पवन कुमार वर्मा या मधु मिश्रा आदि हों उनमें इतना भी साहस नहीं है कि वे उपर्युक्त देशद्रोहियों व इमाम बुखारी की भर्त्सना कर सकें। आज की राजनीतिक स्थिति इतनी भ्रामक, विरोधाभासी, एवं विषाक्त सेकुलर बुद्धिजीवियों या नेताओं द्वारा रची गई है और समय की माँग है कि हमारे प्रधानमंत्री सबसे महत्त्वपूर्ण पहला कदम निर्भीक होकर उठाएँ–यह कदम है केन्द्रीय अल्पसंख्यक मंत्रालय को भंग करना और उसके स्थान पर हर नागरिक को समानाधिकार के लिए सदाशयता से आश्वस्त करना। क्योंकि वह मंत्रालय असंवैधानिक है इसे निर्भीक होकर तुरन्त भंग करना ही अपेक्षित है।

आतंकियों से निबटने में न हो राजनीति

मिथिलेश सिंह

पिछले दिनों ऊफा में भारत के प्रधानमंत्री और पाकिस्तानी पीएम की बैठकों के बाद कुछ उम्मीद जगी थी कि कम से कम २१वीं सदी में दोनों देश अपने देश की गरीब जनता पर तरस खाएंगे और आतंक की राह छोड़ने की संभावनाएं तलाशेंगे। लेकिन, कुत्ते की दुम में कितना भी घी लगाया जाय, उससे वह सीधी तो हो नहीं जाती है। नरेंद्र मोदी ने भी पाकिस्तानी पीएम से अपनी पहल पर बात की, इसलिए विपक्षी नेताओं द्वारा प्रधानमंत्री पर तीखा हमला भी किया जा रहा है। केंद्र की मोदी सरकार के गठन के बाद पंजाब में बड़े आतंकी हमले को अंजाम दिया गया। हालाँकि, पंजाब पुलिस के जवानों ने सफलतापूर्वक आतंकियों को मौत की नींद सुला दिया। किन्तु इस आपरेशन में ५ जवानों समेत ३ नागरिकों की भी मौत हो गयी। इस हमले के बाद जहाँ पंजाब में मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल ने आपात बैठक बुलाई और पूरे पंजाब में अलर्ट जारी कर दिया, वहीं गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने बीएसएफ के महानिदेशक डीके पाठक से बात की और भारत–पाकिस्तान सीमा पर चौकसी बढ़ाने के तत्काल निर्देश दिए। इन प्रशासनिक मुद्दों को सफलतापूर्वक हैंडल करने के बाद, इस मुद्दे पर अनापेक्षित राजनीति भी शुरू हो चुकी है। इस मुद्दे पर एक तरफ जहाँ संसद को ठप्प किया गया, वहीं दूसरी ओर भाजपा और मोदी सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन भी शुरू कर दिए गए। गौरतलब है कि इस प्रकार का विरोध करने के लिए, हमारे राजनीतिक दल २४ घंटे भी इन्तेजार करने की जहमत नहीं उठा सके। हमारी मानसिकता

का ऐसा आलम देखकर यकीन नहीं होता है कि हम अपने देश की एकता, अखंडता के प्रति किस हद तक गैर–जिम्मेवार हैं। पंजाब में हुए इस आतंकी हमले में कई दूसरी बातें भी सामने आयीं, जिन्हें जोड़ने पर खतरनाक संकेत उभरते हैं। एक तरफ कुछ देशद्रोही खालिस्तान के दौर की बातें करने लगे हैं, जिनमें पाकिस्तानी सोशल मीडिया के यूजर्स भी शामिल हैं। पाकिस्तान में भारत विरोधी ट्रेंड कोई नयी बात है नहीं, इसलिए इस पर आश्चर्य नहीं किया जाना चाहिए, किन्तु सच यह है कि उसके द्वारा खालिस्तान के मुद्दे को उकसाया जाना जरूर गंभीर है। इस हमले के दूसरे एंगल के रूप में अमरनाथ यात्रा पर बड़े हमलों की साजिश की बातें कहीं जा रही है, जो घाटी में तनाव उत्पन्न करने और आतंक का नया दौर शुरू करने की कोशिश भी हो सकती है। हालाँकि, पाकिस्तान ने कूटनीतिक चाल चलते हुए पंजाब में हुए आतंकी हमले की निंदा जरूर की है, किन्तु पंजाब के मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल का वक्तव्य गौर करने लायक है कि हमलावर बॉर्डर पार से ही आये हैं और इस बारे में सुरक्षा एजेंसियों ने अलर्ट भी जारी किया था। इस अलर्ट को गंभीरता से न लेने के लिए, प्रकाश सिंह बादल ने केंद्र सरकार पर अपनी भड़ास भी निकाली है और कहा है कि जब सुरक्षा अलर्ट था तब सीमा को सील क्यों नहीं किया गया। पंजाब में ही रेलवे ट्रैक पर जिंदा बम मिलने की पुष्टि भी हुई है, जिसके कारण ट्रेनों की आवाजाही को भी रोकना पड़ा। चर्चित नेता बन चुके अरविन्द केजरीवाल ने भी पंजाब में आतंकी हमलों की निंदा की है, लेकिन सोशल मीडिया पर उनकी कड़ी आलोचना हो रही है, जिसमें उनके द्वारा पुलिसवालों को कहे गए 'ठुल्ला' बयान की निंदा करते हुए यूजर्स पूछ रहे हैं कि आतंकी हमलों में अपनी जान गंवाने वाले पुलिस सिपाही 'ठुल्ला' हैं तो केजरीवाल जैसे नेता क्या हैं? केजरीवाल की पार्टी के कुछ नेताओं द्वारा खालिस्तान समर्थक होने की बातें भी सामने आ रही हैं, जिसकी कड़ी निंदा की जा रही है। ऐसा भी नहीं है कि विपक्ष हर सवाल गलत ही पूछ रहा है, बल्कि उसके द्वारा उठाये गए प्रश्न कई बार जायज भी प्रतीत होते हैं। जैसे, क्योंकि सीमा सुरक्षा के अतिरिक्त आतंकियों को हथियार निश्चित रूप से लोकल सप्लाई से ही मिले होंगे, उन्हें ध्वस्त करने की जिम्मेवारी किसकी है। पंजाब के मुख्यमंत्री बेशक, केंद्र पर इंटेलिजेंस फेल्योर का आरोप लगा दें, किन्तु सच तो यह भी है कि उनकी लोकल इंटेलिजेंस भी फेल हुई है। इसके अतिरिक्त, एक ओर दीनापुर थाने में छिपे तीनों आतंकी पूरी तैयारी के साथ जवानों का मुकाबला कर रहे थे, वहीं पंजाब पुलिस अपने जवानों की सुरक्षा को लेकर इतनी आश्वस्त थी कि उन्हें बुलेट प्रूफ जैकेट्स और हेलमेट देना भी जरूरी नहीं समझा गया। आतंकी AK-४७ से लड़ रहे थे तो दूसरी ओर पुलिस शेष पृष्ठ 10 पर

शक्तिशाली होता भारत

डॉ. सौरभ मालवीय

'राष्ट्र सर्वोपरि' यह कहते नहीं बल्कि उसे जीते हैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी। पिछले कुछ दशकों में भारतीय जनमानस का मनोबल जिस प्रकार से टूटा था और अब मानों उसमें उड़ान का एक नया पंख लग गया है और अपने देश ही नहीं दुनिया भर में भारत का सीना चौड़ा करके शक्ति–सम्पन्न राष्ट्रों एवं पड़ोसी देशों से कन्धे से कन्धा मिलाकर कदमताल करने लगा है भारत। किसी भी देश, समाज और राष्ट्र के विकास की प्रक्रिया के आधारभूत तत्व मानवता, राष्ट्र, समुदाय, परिवार और व्यक्तिही केंद्र में होता है। जिससे वहाँ के लोग आपसी भाईचारे से अपनी विकास की नैया को आगे बढ़ाते हैं। अपने एक साल के कार्यकाल में मोदी इसी मूल तत्त्व के साथ आगे बढ़ रहे हैं। एक वर्ष पहले जब नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने पूर्ण बहुमत से केंद्र में सरकार बनाई तक इनके सामने तमाम चुनौतियाँ खड़ी थीं और जन अपेक्षाएँ मोदी के सामने सर–माथे पे। ऐसे में प्रधानमंत्री और उनके मंत्रिपरिषद के सहयोगियों के लिए चुनौतियों का सामना करते हुए विकास के पहिये को आगे बढ़ाना आसान राह नहीं थी। परन्तु मात्र ३६५ दिन में ही मोदी के कार्ययोजना का आधार बताता है कि उनके पास दूरदृष्टि और स्पष्ट दृष्टि है। तभी तो पिछले एक साल से समाचार–पत्रों में भ्रष्टाचार, महंगाई, सरकार की ढुलमुल निर्णय, मंत्रियों की मनमर्जी, भाई–भतीजावाद, परिवारवाद अब नहीं दिखता।

किसी भी सरकार और देश के लिए उसकी छवि महत्त्वपूर्ण होती है मोदी इस बात को बखूबी समझते हैं। इसलिए दुनिया भर के तमाम देशों में जाकर भारत को याचक नहीं बल्कि शक्तिशाली और समर्थ देश के नाते स्थापित कर रहे हैं। नरेंद्र मोदी जिस पार्टी के प्रतिनिधि के रूप में आज प्रधानमंत्री बने हैं, उस भारतीय जनता पार्टी का मूल विचार एकात्म मानव दर्शन एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है और दीनदयाल उपाध्याय भी इसी विचार को सत्ता द्वारा समाज के प्रत्येक तबके तक पहुँचाने की बात करते थे। समाज के सामने उपस्थित चुनौतियों के समाधान के लिए सरकार अलग–अलग समाधान खोजने की जगह एक योजनाबद्ध तरीके से काम करे। लोगों के जीवन की गुणवत्ता, आधारभूत संरचना और सेवाओं में सुधार सामूहिक रूप से हो। प्रधानमंत्री इसी योजना के साथ गरीबों, वंचितों और पीछे छूट गए लोगों के लिए प्रतिबद्ध हैं और वे अंत्योदय के सिद्धांत पर कार्य करते दिख रहे हैं। भारत में आजादी के बाद शब्दों की विलासिता का जबर्दस्त दौर कुछ तथाकथित बुद्धिजीवियों ने चलाया। इन्होंने देश में तत्कालीन सत्ताधारियों को छल–कपट से अपने घेरे में ले लिया। परिणामस्वरूप राष्ट्रीयता से ओत–प्रोत जीवनशैली का मार्ग निरन्तर अवरुद्ध होता गया। अब अवरुद्ध मार्ग खुलने लगा है। संस्कृति से उपजा संस्कार बोलने लगा है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का आधार हमारी युगों पुरानी संस्कृति है, जो सदियों से चली आ रही है। यह सांस्कृतिक एकता है, जो किसी भी बंधन से अधिक मजबूत और टिकाऊ है, जो किसी देश में लोगों को एकजुट करने में सक्षम है और जिसमें इस देश को एक राष्ट्र के सूत्र में बाँध रखा है। भारत की संस्कृति भारत की धरती की उपज है। उसकी चेतना की देन है। साधना की पूँजी है। उसकी एकता, एकात्मता, विशालता, समन्वय धरती से निकला है। भारत में आसेतु–हिमालय एक संस्कृति है। उससे भारतीय राष्ट्र जीवन प्रेरित हुआ है। अनादिकाल से यहाँ का समाज अनेक सम्प्रदायों को उत्पन्न करके भी एक ही मूल से जीवन रस ग्रहण करता आया है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के एजेंडे को नरेंद्र मोदी इसी रूप में पूरा कर रहे हैं।

पिछले पाँच दशकों में भारत के राजनीतिक नेतृत्व के पास दुनिया में अपना सामर्थ्य बताने के लिए कुछ भी नहीं था। सच तो ये है कि इन राजनीतिक दुष्चक्रों के कारण हम अपनी अहिंसा को अपनी कायरता की ढाल बनाकर जी रहे थे। आज पहली बार विश्व की महाशक्तियों ने समझा है कि भारत की अहिंसा इसके सामर्थ्य से निकलती है। जो भारत को ६० वर्षों में पहली बार मिली है। सवा सौ करोड़ भारतीयों के स्वाभिमान का भारत अब खड़ा हो चुका है और यह आत्मविश्वास ही सबसे बड़ी पूँजी है। तभी तो इस पूँजी का शंखनाद न्यूयार्क के मैडिसन स्क्वायर गार्डन से लेकर सिडनी, बीजिंग और काठमांडू तक अपने समर्थ भारत की कहानी से गूंज रहा है। ३६५ दिन के काम का आधार मजबूत इरादों को पूरा करता दिख रहा है। नरेंद्र मोदी को अपने इरादे मजबूत करके भारत के लिए और परिश्रम करने की जरूरत है।

स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्यकार महिलाओं का योगदान

साहित्य मनीषी वीरांगनाएँ

आजादी की जंग में चौराहे–चौराहे पर कफन बाँधकर दमन और दुर्व्यवस्थाओं का मुकाबला करने और शहादत में अपना नाम दर्ज कराने में अनेक वीरों ने अपने प्राणों की आहुति। शहीदों की शहादत तो अंतहीन गाथा है किन्तु उन साहित्य मनीषी महिलाओं को भी नहीं भुलाया जा सकता जिनकी वीरोचित भावनाओं ने अपना सर्वस्व आजादी की बलिवेदी पर चढ़ा दिया। ऐसी वीरांगनाओं में कई कवयित्री एवं लेखिकाएँ थीं जिन्होंने देशप्रेम से ओतप्रोत होकर क्रांति की ज्वाला भड़काई। इन वीरांगनाओं की रक्त से सनी कलम शोले उगलती थी, देश प्रेम का जज्बा इनकी कलम को तलवार बना देता था। इनके गीत क्रांतिकारियों के हृदय में ऐसे शोले भड़काते थे जो शत्रुओं की छाती को भून डालने के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। किसी भी प्रकार का प्रलोभन इन्हें देशप्रेम से नहीं हटा सका। ठीक ही कहा गया है कि 'कलम में तलवार से भी तीखे प्रहार की शक्ति है।'

एनीबेसेंट : लेखनी से शंखनाद करने वाली, ओजस्वी मंत्र फूंकने वाली श्रृंखला में एनीबेसेंट का नाम प्रमुख है जो सत्य की खोज में भारत आई किन्तु भारत आकर उन्होंने अपना सारा जीवन सेवा के लिए समर्पित कर दिया। एनीबेसेंट ने सन १९१३ में 'कामन विल' नामक साप्ताहिक पत्र निकाल कर स्वतंत्रता संग्राम का उद्घोष किया। इसके बाद उन्होंने 'मद्रास स्टैंडर्ड' खरीदकर उसका नाम 'न्यू इंडिया' रखा। वे इन पत्रों के माध्यम से जोशीले ओजस्वी क्रांतिकारी लेख लिखती रहीं इसलिये उन्हें जून १९१७ में गिरफ्तार कर लिया गया। कांग्रेस का अध्यक्ष पद स्वीकार करते हुए सन १९२६ में एनी बेसेंट ने 'नेशनल कन्वेंशन' नामक एक नया आंदोलन चलाया।

सत्य की खोज में निकली ऐनी बेसेंट स्वामी विवेकानंद से मिल चुकी थीं। वे कहा करती थी, 'सत्य के अनुसंधान में चाहे मेरे समस्त लौकिक बंधन टूट जाएँ, मित्रता और सामाजिक बंधन छिन्न–भिन्न हो जाएँ, चाहे मैं प्रेम से वंचित हो जाऊ, चाहे मुझे उसके लिए निर्जन वन ही क्यों न भटकना पड़े, सत्य प्रकट होकर चाहे मुझे क्यों न मिटा डाले मैं उसका अनुसरण करने से पीछे नहीं हटूँगी। यही प्रखरता और आत्मविश्वास उनकी सेवा का मंत्र रहा।

स्वर्ण कुमारी देवी

स्वर्ण कुमारी देवी : कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर की बड़ी बहन स्वर्ण कुमारी देवी मूलतः साहित्यकार थीं जिन्हें भारत की प्रथम महिला उपन्यासकार, संपादक, पत्रकार होने का गौरव प्राप्त हुआ। स्वर्ण कुमारी देवी ने 'भारती' जैसी पत्रिका का सात वर्ष तक सफल संपादन किया। समाज में फैले अंधविश्वास, रूढ़ियों, कुरीतियों के खिलाफ इन्होंने अपनी पत्रिका के माध्यम से तीखा प्रहार किया। इनकी कलम देशभक्ति के जज्बे से सनी थी। इनका प्रथम उपन्यास 'दीप निर्वाह' १८७६ में प्रकाशित हुआ जो राष्ट्रीय जागृति की सर्वोत्तम कृति है। स्वतंत्रता आंदोलन के अधूरे काम को स्वर्ण कुमारी देवी ने अपनी बेटी सरला देवी चौधरी को सौंपा।

सरला देवी चौधरी : सरला देवी चौधरी अपनी माँ की पत्रिका 'भारती' के लिए ओजस्वी लेख लिखतीं और भारती का संपादन संभालते हुए राष्ट्रीय क्रांति के लिए कार्य करतीं। उनके जोशीले लेख पढ़कर नवयुवक युवतियों का विदेशी शासन के विरुद्ध खून खौलने लगता था। स्वतंत्रता आंदोलन के लिए इन्होंने एक विराट संगठन खड़ा किया। 'बंगरे वीर' नामक पुस्तक लिखकर इन्होंने राष्ट्रीय चेतना जगाने का कार्य किया।

भगिनी निवेदिता : युगद्रष्टा स्वामी विवेकानंद की शिष्या भगिनी निवेदिता जिनके हृदय में स्वाधीनता, सेवा और साधना की त्रिवेणी बहती थी के लिए समानता, गरीबी, गुलामी से मुक्ति, मानव एवं देश की सेवा के लिए समर्पण ही मूलमंत्र था। आयरलैंड निवासी सन्यासनी भगिनी निवेदिता का वास्तविक नाम मार्गरेट नोबुल था। निवेदिता ने भारत भूमि को अपनी कर्मभूमि बनाया। इनकी लेखनी नारी शिक्षा, नारी जागृति, देशप्रेम की भावना जनमानस में अविरल भरती रही। इनकी क्रांतिकारी कवितायें प्रेरणादायक और सर्वोत्कृष्ट रहीं। 'युगांतर' जैसी क्रांतिकारी पत्रिका निवेदिता के कारण ही काम करती रही। भारत के लिए सब कुछ न्यौछावर करने वाली निवेदिता को विवेकानंद ने अपनी मानस कन्या मान लिया था। मार्गरेट नोबुल को श्री अरविंद ने भगिनी निवेदिता कहा और कविवर रवींद्रनाथ ठाकुर ने उन्हें 'लोकमाता' कहकर पुकारा।

भगिनी निवेदिता

डॉ. मुथुलक्ष्मी : लेखिका और स्वतंत्रता सेनानी भारत की प्रथम विधायक डॉ. मुथुलक्ष्मी थीं। डॉ. मुथुलक्ष्मी ने सन १९३० में गाँधी जी के साथ नमक सत्याग्रह आंदोलन में अपनी गिरफ्तारी दी थी। वे अपने लेखों द्वारा भारतीय जनमानस में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह के स्वर भरते हुए ब्रिटिश शासन और पुलिस द्वारा महिलाओं पर अत्याचार के विरोध में जी–जान से जुटी रहीं। उन्होंने घोर जेल यातनाएँ सहीं। राष्ट्रीय सेवा करते हुए उन्होंने विभिन्न विषयों पर पुस्तके भी लिखीं। गर्व की बात यह भी है कि डॉ. मुथुलक्ष्मी भारत की प्रथम महिला डॉक्टर १८९३ में बनीं। भारत का गौरव कहलाने वाली डॉ. रेड्डी मानवता की सेवा में सतत जुटी रहीं।

डॉ. मुथुलक्ष्मी

सरोजनी नायडू

सरोजनी नायडू : भारत कोकिला कही जाने वाली सरोजनी नायडू जन्म से ही कवियित्री थीं। सरोजनी नायडू के गुरु अंग्रेजी साहित्यकार एडमंड गांसे उनके साहित्यिक गुरु थे। वे विदेशों में भारतीय संस्कृति और सभ्यता का प्रसार करती रहीं। इस कार्य में उनका अंग्रेजी ज्ञान सहायक सिद्ध हुआ। वे साहित्य के द्वारा देशभक्ति, राजनीति जैसे विभिन्न क्षेत्रों में सराहनीय कार्य करती रहीं। इनकी रचनाओं में भारत की आत्मा बसती थी।

कमला देवी चट्टोपाध्याय : कमला देवी चट्टोपाध्याय एक ऐसा नाम है जो केवल लेखिका ही नहीं वरन क्रांति आंदोलन की जुझारू नेता, महान कलाकार और सामाजिक क्रांति कही जाती हैं। कमला देवी ने १९२७ में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की स्थापना में अहम भूमिका निभाई है। पुनः इस संगठन के अध्यक्ष पद को भी संभाला। स्वतंत्रता आंदोलन सन १९३५–४४ के बीच कई बार इन्होंने जेल यात्रा की। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी देश की उन्नति के लिए हमेशा प्रयासरत रहीं। कमला देवी ने इंडियन वूमेन, बैटल फॉर फ्रीडम, एट दा क्रॉस रोड, अवेकनिंग ऑफ इंडियन वूमेन, वूमेन मूवमेंट ऑफ इंडिया, द ग्लोरी ऑफ इंडियन हैंडीक्राफ्ट जैसी पुस्तकें लिखी हैं। राष्ट्र को उनकी यह महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

कमला देवी चट्टोपाध्याय

दुर्गा बाई, देशमुख : प्रसिद्ध चिंतक, समाज सेवी, स्वतंत्रता और सेवा की प्रतिमूर्ति थीं दुर्गा बाई, देशमुख। 'नई हिंदी' अंग्रेजी पत्रिकाओं में उनके विचार प्रकाशित होते रहे। अंग्रेजी प्रशासन के खिलाफ उन्होंने कई क्रांतिकारी लेख लिखे थे।

सुभद्रा कुमारी चौहान : राष्ट्र का गौरव सुभद्रा कुमारी चौहान की ओजस्वी रचनाएँ क्रांतिकारियों के लिए मंत्र साबित हुई। राखी की लाज जलियांवाला बाग में बसंत, झाँसी की रानी जैसी अमर कविताओं ने भारतीय जनमानस में क्रांति की ज्वाला जलाई जिसे पढ़कर क्रांतिकारी युवाओं का अंग्रेजों के खिलाफ खून खौलने लगता था और वे कफन बाँधकर लड़ने को तैयार हो जाते थे। इन्होंने 'कर्मवीर' पत्रिका के लिए कार्य किया जिसका संपादन 'भारत की आत्मा' कहे जाने वाले कवि माखन लाल चतुर्वेदी कर रहे थे। सुभद्रा कुमारी चौहान ने आजादी के महायज्ञ में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया।

दुर्गा बाई, देशमुख

सुशीला देवी : सुशीला देवी मूलतः कवियित्री थीं किन्तु उन्होंने शहीदों की शहादत में सक्रिय भागीदारी निभाई।

शेष पृष्ठ 11 पर

HARNESSING HUMANISM

DR. ANIRBAN GANGULY

Indianisation of education is often negated with allegations of 'saffronisation', even without understanding the content and structure of such education. Debating and discussing this model with indigenous roots is inevitable to build India as a capital of human development.

It augurs well that the present Ministry of Human Resource Development (MHRD) has initiated a process of eliciting views from the grass roots on the direction and dimension that India's education policy must take. Such a countrywide education outreach comes after a long hiatus. HRD Minister Smriti Irani has rightly termed this massive outreach as a "process of democratisation of Indian education", where people on the ground, the local decision-makers, the grass roots opinion-makers, village family members and those part of the village education councils would be approached for their views on the education to be imparted in India. Such an initiative turns the effort of reimagining Indian education into a truly democratic exercise, shorn of elitism and coterie control. It is a going back to the roots of sorts and trying to explore the spirit of basic education in India.

Ironically, the Gandhi's political heirs were the first ones to dump his own cherished "basic education" thesis and model, which supported a dynamic involvement of the grass roots in education. Such a dumping of the Gandhi's education philosophy led to the widening of the chasm between sections and social units by continuing with an education that was devoid of practicality and divorced from the essential spirit and ethos of the land.

Interestingly, such a countrywide effort is a regeneration of sorts as education, in the Indian civilisational matrix, has always been a deeply participative field. The community and the common citizen played an active part in sustaining the vast and complex educational network that evolved out of the Indian civilisational experience. In fact, teachers in the Indian education framework were often parivrajakas who travelled around the land going from village to village "promoting Loksangraha", general welfare, by disseminating values and knowledge.

The village in India, before it was deprived of its participatory and self-regenerating capacities, was an active participating unit in the promotion and sustenance of education. An inscription of the great monarch Rajendra Chola (1012-1044 CE) for example, mentions how a "village made an endowment for establishing an education centre that would provide "free boarding and teaching to at least 340 students."

Some of the leading universities of the ancient world, such as Nalanda and Vallabhi received munificent endowments and support from monarchs as it did from ordinary people and village communities. Both, historian Radhakumud Mookerjee in his opus Ancient Indian Education, (1969) and Dharampal, in The Beautiful Tree: Indigenous Indian Education in the Eighteenth Century (reprint 2000) a seminal study of the complex indigenous education network and tradition in India, attest to this deep community involvement in the shaping of India's educational tradition and system. Dharampal, for example, points to British civil servant GW Leitner's Report on the "History of Education in Panjab (Punjab) since annexation, 1882" and argues that support for education was a widely prevalent habit among Indians. Leitner (1840-1899) an "orientalist" appointed as principal of the Lahore Government College in 1864 undertook a detailed survey of the then existing indigenous education network and habits in Punjab. "Respect for learning", noted Leitner in his report, "has always been the redeeming feature of 'the East' …The most unscrupulous chief, the avaricious moneylender, and even the freebooter, vied with the small landowner in making peace with his conscience by founding schools and rewarding the learned…There was not a single villager who did not take pride in devoting a portion of his produce to a respected teacher."

Dharampal also brings notice to the Company civil servant William Adam's Report on the state of education in Bengal in 1835-38, which concluded, on seeing the extensive network of indigenous schools in the region that there was indeed a deep seated urge for education among the common people.

Not merely was there a physical educational infrastructure, a well laid philosophy and educational ethics and practise too was followed in the Indian educational tradition. In the University of Nuddeah (Nadia in Bengal), a record of 1791 describes, it was a "professed and established maxim that a pundit who lost his temper, in explaining any point to a student, let him be ever so dull and void of memory, absolutely forfeited his reputation, and [was] disgraced" and "when a student [heard] anything advanced, or expressed that he [did] not perfectly understand, he [had] the privilege of interrogating the master about it." The masters, on the other hand, were bound to give the "young men every encouragement, to communicate their doubts, by their temper and patience in solving them." Thus long before the term "Knowledge Society", came into vogue and Knowledge Commissions were constituted with the declared objective of turning India into a "Knowledge Society", civilisational India was already recognised as a leading knowledge society and educational hub of the world.

Such a vibrant structure survived until the colonial system through a diversion of revenue from land gradually desiccated and destroyed the system altogether. Swami Vivekananda, in a scathing letter (October 30th 1899) famously observed how "all property and lands granted for education" by the Indian governance structure "have been swallowed up" by the colonial government. The attempt, therefore, of eliciting the involvement of village education councils is a move in the right direction to re-ignite this participatory spirit in the formation of a new Indian education thought.

The exercise of evolving a new education policy for India may also recognise and seek inspiration and direction from movements and formulations that sprang up from the psyche of this land and its civilisational experience. The national education movement in the early part of the last century, corresponding efforts all over the country, especially in the western and southern parts, saw a large number of national schools being conceived. A varied and multilayered debate also enriched the national education movement with most of the stalwarts of the era contributing their thoughts to the effort of re-creating an education system that aspired to evolve from the Indian ethos and to become responsive to Indian aspirations and goals.

Swami Vivekananda, Gurudev Rabindranath Tagore, Acharya Satish Chandra Mukherjee – through the pages of his Indic and educational affairs journal The Dawn Magazine, the Lokmanya himself, Bipin Chandra Pal, through his series on education in New India, Lala Lajpat Rai – in his seminal The Problems of

conitnued on page no. 11

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

आतंकवादी याकूब मेनन को फांसी देने के लिए राष्ट्रपति महोदय को बधाई, न्यायालय की अवमानना के दोषियों पर हो कारवाई : हिन्दू महासभा

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने एक संयुक्त वक्तव्य जारी करके आतंकी याकूब मेनन को फांसी देने के लिए राष्ट्रपति महोदय को बधाई देते हुए कहा है कि सुप्रीम कोर्ट को उन लोगों के खिलाफ भी संज्ञान लेना चाहिए, जिन्होंने याकूब को फांसी देने के फैसले का पब्लिकली विरोध करके न्यायालय की अवमानना करने का कार्य किया। गौरतलब है कि २२ साल तक केस चलने के बाद, प्रत्येक कानूनी पहलु इस्तेमाल कर चुके याकूब मेनन को फांसी देने के फैसले का कुछ तथाकथित बुद्धिजीवी विरोध करते हुए न्यायालय की अवमानना की सीमा रेखा को भी पार कर गए थे। यहाँ तक कि सुप्रीम कोर्ट पर भी कई वकीलों ने दबाव बनाने की भरपूर कोशिश की और आतंकी को फांसी देने के पहले की रात कोर्ट की कार्यवाही चलती रही। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कौशिक ने माननीय कोर्ट को किसी भी प्रकार के दबाव में आये वगैर फांसी की सजा बरकरार रखने को न्याय की जीत बताया, वहीं राष्ट्रीय महामंत्री श्री शर्मा ने उन तमाम बयानवीरों के ऊपर संज्ञान लेकर कंटेम्प्ट ऑफ कोर्ट का मुकददमा चलाने की अपील की है, जिन्होंने इस केस को प्रभावित करने की गैर कानूनी कोशिश की। राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा कि यदि जरूरत पड़े तो केंद्रीय मंत्रिमंडल इस प्रकार के कानून का निर्माण भी करे, जिससे आगे से भारतीय प्रशासन को चुनौती देने वालों से सख्ती से निपटा जा सके। हिन्दू महासभा ने याकूब मेनन को फांसी मिलने के बाद अपने केंद्रीय कार्यालय पर पटाखे छोड़े और मिष्ठान वितरण करते हुए भारत माता की जयकार करते हुए राष्ट्र की जीत बताया।

महान राष्ट्रवादी मिसाइलमैन भारत रत्न डॉ० कलाम का निधन देश की अपूरणीय क्षति, हिन्दू महासभा ने शोक सभा का आयोजन किया

अखिल भारत हिन्दू महासभा के केंद्रीय कार्यालय हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग पर आज एक शोक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें हमारे रक्षा वैज्ञानिक, पूर्व राष्ट्रपति और उनसे बढ़कर युवाओं के प्रेरणा श्रोत रहे डॉ० अब्दुल कलाम के निधन पर शोक प्रकट करते हुए उनकी आत्मा की शांति की प्रार्थना की गयी। राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी समेत हिन्दू महासभा के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं ने महान आत्मा को श्रद्धासुमन अर्पित किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कौशिक एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री शर्मा ने डॉ० कलाम की उपलब्धियों को याद करते हुए कहा कि उनका मानना था कि जब तक भारत विकसित देशों की कतार में नहीं खड़ा होगा, तब तक कोई हमारा सम्मान नहीं करेगा। इस विश्व में डर की कोई जगह नहीं है। यहां केवल शक्ति ही शक्ति का सम्मान करती है। राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा कि डॉ० कलाम युवाओं के बड़े प्रेरणाश्रोत रहे हैं और उनके जाने से देश को अपूरणीय क्षति हुई है। हिन्दू महासभा के कार्यकर्ताओं ने डॉ० कलाम के राष्ट्रप्रेम को नमन करते हुए ईश्वर से उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की तथा उनके अधूरे सपनों को पूरा करने का संकल्प लिया।

शेष पृष्ठ 7 का **आतंकियों से निबटने में ...**

के जवान पुरानी हो चुकी सेल्फ लोडिंग राइफल्स (एसएलआर) से उनका सामना कर रहे थे। आखिर, पंजाब पुलिस के जवान बिना किसी सुरक्षा के आतंकियों से लोहा ले रहे थे, तो इसकी जिम्मेवारी किसकी बनती है। उनके पास न तो बुलेट प्रूफ जैकेट्स थीं, और न ही उन्हें सुरक्षा हेलमेट के साथ अभियान में उतारा गया था जो अभियान को लेकर नासमझी और एक व्यापक रणनीति की कमी को साफ दर्शाता है। इसलिए आरोप–प्रत्यारोप के अलावा, देश की एकता और अखंडता के लिए, इस कठिन घडी में राजनीति की बजाय अगर देशहित को ध्यान में रखा जाय तो पक्ष और विपक्ष के साथ राज्य सरकार को भी अपना सही कर्त्तव्य आप ही समझ आ जायेगा, जो किसी भी राजनीति से परे होगा और शायद यही देशहित का मूल भी है। इसके अतिरिक्त, सीमा और लोकल इंटेलिजेंस के अलावा पुलिस का आधुनिकीकरण भी मुख्य मुद्दा है, जिसपर ध्यान दिया जाना उतना ही आवश्यक है, जितना तुच्छ राजनीति से निबटने की इच्छाशक्ति होना।

शेष पृष्ठ 1 का **भारत और थाईलैंड नौसेना....**

बीच वर्तमान सहयोग की समीक्षा की और वे उसे बढ़ाने पर सहमत हुए। समुद्री व्यापार पर दोनों देशों की उच्च निर्भरता और समुद्री क्षेत्र में आने वाली चुनौतियों पर ध्यान देते हुए दोनों पक्षों ने एक दूसरे की समुद्री सीमा जागरूकता को बढ़ाने के लिए नौवहन पर उन सूचनाओं की पहचान की, जिनका आदान प्रदान किया जा सकता है। उन्होंने समन्वित गश्ती एवं समुद्री लूटपाट के विरूद्ध कदम उठाने जैसे तात्कालिक विषयों पर भी चर्चा की। उन्होंने समुद्र संबंधी सर्वेक्षण में सहयोग की संभावनाओं पर भी गौर किया।

हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयत्व है

क्योंकि हिन्दू और केवल हिन्दू ही इस देश को भारत माता मानते हैं जबकि कुछ विशेष धर्मावलम्ब तो इसे माता कहने मात्र से भी चिढ़ते हैं। अतएव इस देश की एकता व अखण्डता की रक्षा केवल हिन्दुत्व की भावना ही कर सकती है।

ध्यान रखिये :-

- किसी भी इस्लामी राष्ट्र में हिन्दुओं को वैसी धार्मिक स्वतन्त्रता उपलब्ध नहीं हैं जो यहाँ सभी धर्मावलम्बियों को है।
- इस धरती पर भारत ही एकमात्र राष्ट्र है जहाँ हिन्दू बहुसंख्यक है।
- यदि यहाँ भी हिन्दू अल्पसंख्यक हो गये तो सम्पूर्ण विश्व से हिन्दू धर्म ही पूर्णतः समाप्त हो जाएगा।
- धर्मान्तरण से ही राष्ट्रान्तरण होता है।
- तथाकथित धर्मनिरपेक्षतावादियों ने (किन्तु वस्तुतः मुस्लिम व ईसाई तुष्टिकरणवादियों पूर्व में भी भारत माता का अंग–भग करवाया था तथा भविष्य में भी वे अपनी स्वार्थ सिद्धि हेतु भारत के और अंग–भंग करवाने में नहीं हिचकिचायेंगे।
- **सम्पूर्ण देश में हिन्दू महासभा ही एक मात्र ऐसा राजनैतिक दल है जो हिन्दू हितों की हित के प्रति मनसा–वाचा–कर्मणा जागरूक तत्पर और सन्नद्ध है।**
- शेष सभी दल वचन से धर्मनिपेक्षतावादी तथा मन व कर्म से मुस्लिम व ईसाई तुष्टिकरणवादी है।

अत : यदि आप चाहते हैं कि :–

सन् **1947** की भाँति भारत माता का भविष्य में और अधिक अंग–भंग न हो और धरती पर हिन्दू सदैव अक्षुण्ण रहे, तो –

- अविलम्ब अखिल भारत हिन्दू महासभा के सदस्य बनिये।
- हिन्दू महासभा को तन–मन व धन से सहयोग दीजिये।
- लोकसभा, विधानसभा आदि सभी चुनावों में सदैव हिन्दू महासभा के प्रत्याशियों को ही अपना मत व समर्थन दीजिये।
- हिन्दू महासभा के मुख्यपत्र साप्ताहिक 'हिन्दूसभा वार्ता' के ग्राहक बनें और बनाइये। वार्षिक शुल्क रू. **150/-**

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

conitnued from page no. 9
HARNESSING HUMANISM...

National Education in India, Sri Aurobindo in his A System of National Education in India and the Brain of India, Sister Nivedita in her Hints on National Education in India, Ananda Coomaraswamy in Essays in National Idealism or Gijubhai Badheka, much later, in his celebrated Divasvapna and of course the Gandhi, through his epochal Basic Education treatise, formed active determinants of this debate and produced a copious educational corpus that sustained and shaped the larger education movement. Interestingly, all these education thinkers were not mere theoreticians playing with statistics but were active educationists themselves carrying out experiments in the field.

Even today a great degree of contemporaneity exists in the educational formulations of these visionary leaders and educationists. Despite six decades of marginalisation their thoughts continue to possess great education power that is hard to ignore if one truly wishes to evolve a new education vision for India. The Indian civilisational education experience was never of the past, it is rather a continuum that points to the future, perhaps the time is

शेष पृष्ठ 5 का
श्री रामचरित मानस का .....

वो जीव तथा प्राणी हमारी पृथ्वी जैसे नहीं होंगे। पाश्चात्य जगत ४०० वर्ष पूर्व तक पृथ्वी को गोल मानने को भी तैयार नहीं था, और उसके विपरीत प्रायः स्मरणीय कवि श्रेष्ठ तुलसीदास जी ने भगवान राम भक्त काक भसुंड जी के द्वारा रामचरित मानस में वह सब वर्णित कर दिया जहाँ तक विज्ञान और खगोलशास्त्र की अनेक विज्ञानशालायें और विश्व भर में फैले हुए उनके खोज तंत्र ढूँढ पाये हैं। आचार्य प्रवर ने यह सब लिखकर अब से ४०० वर्ष पूर्व सम्पूर्ण मानवता का मार्ग दर्शन कर दिया। भक्त श्रेष्ठ कविवर तुलसी दास जी ने यह भी सिद्ध कर दिया कि भगवान श्री नारायण जी श्री राम के ही पर्याय हैं वो क्षीर सागर अर्थात मिल्की वे में निवास करते हैं। सारा जगत तो मिल्की वे में समाया हुआ है और आचार्य ने लिखा है कि सचराचर जगत उनके स्वामी श्रीराम का ही स्वरूप है। यह लेख श्री रामचरित मानस के वैज्ञानिक स्वरूप को सिद्ध करता है। इससे यह भी सिद्ध है कि वैदिक काल से चली आ रही हम हिन्दुओं की धार्मिक मान्यतायें कितने ठोस, यथार्थवादी और वैज्ञानिक सत्य पर आधारित हैं।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलती

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिले।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-
सदस्यता शुल्क

वार्षिक...150/- रुपये
द्विवार्षिक...300/- रुपये
आजीवन सदस्य..1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।
पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 8 का
स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्यकार.....

उनके गद्य और पद्य दोनों में सशक्त क्रांति की धारा प्रवाहित होती थी। भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु की फाँसी के बाद इनका लिखा बलिदान की पीड़ा से भरा दर्द भरा गीत पंजाब के बच्चे–बच्चे की जुबान पर था। भगत सिंह, भगवती बोहरा आदि क्रांतिकारियों के साथ सुशीला देवी ने क्रांति आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई थी।

भारतीय जनमानस में राष्ट्रभक्ति का जज्बा भरने वाली क्रांतिकारी लेखिका प्रकाशवती प्रसिद्ध क्रांतिकारी यशपाल की पत्नी थीं। सन १९३८ में 'विप्लव' पत्रिका के प्रकाशन का कार्य संभालते हुए वे राष्ट्रीय आंदोलन को गति प्रदान करने वाले लेख लिखती रहीं जो 'विप्लव' पत्रिका में प्रकाशित होते रहे। राष्ट्रप्रेम की सलिल काव्यधारा प्रवाहित करने वाली थीं तोरणदेवी शुक्ल 'लली'। उनकी ओजस्वी कविताएँ उस समय की पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होती थीं। उनकी देशप्रेम की चिंगारी भड़काती कविताएँ क्रांतिकारियों का हौसला बढ़ाती थीं। ऐसी ही कविताओं का संग्रह, 'जाग्रति' प्रकाशित हुआ। उनके इस 'जाग्रति' संग्रह को 'केसरिया' जैसा प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान किया गया। गाँधी जी के प्रभाव से देशप्रेम की कविताएँ लिखने वाली थीं विद्यावती कोकिला। इन्होंने आजादी की जंग में कई बार जेल यात्रा की। इनका महाकाव्य, 'अमर ज्योति' एक अमर कृति है। माँ, सुगाह गीत, सुहागन पुनर्मिलन उनके अमर काव्य संग्रह हैं। आपका झुकाव अरविंद दर्शन की तरफ रहा। विद्यावती कोकिला ने 'सावित्री' के अनुवाद का असाध्य कार्य किया। स्वतंत्रता आंदोलन से अपनी यात्रा प्रारंभ कर आत्मिक स्वतंत्रता की ओर अग्रसर होते हुए अपने जीवन का सफर तय किया। 'दैनिक जन्मभूमि' की सम्पादिका उर्मिला देवी शास्त्री थीं। स्वतंत्रता सेनानी और मातृत्व से भरा उनका जीवन अनोखा था। उर्मिला देवी जुझारू संपादक, संवेदनशील लेखिका, समर्पित देशभक्त थीं। उनकी छोटी बहन पुरुषार्थवती थीं जो राष्ट्रीय भावना की कविताएँ लिखती थीं। दोनों बहनों ने भारत की आजादी के लिए जी–जान की बाजी लगा दी।

अरुणा आसफ अली : स्वतंत्रता संग्राम में अहम भूमिका निभाने वाली महिला थीं अरुणा आसफ अली जिन्हें भारत रत्न कहा जाता है। अरुणा आसफ अली का देशभक्ति का जज्बा अनूठा था। पत्रकार होने के नाते इन्हें जो भी राशि पुरस्कार में प्राप्त होती, वे अपने पत्रों 'लिंक' और 'पैट्रियाट' को जीवित रखने के लिए समर्पित कर देती थीं। उनके लेख जन जाग्रति की भावना से लबालब भरे होते थे। अनेकों पुरस्कारों से नवाजे जाने के बाद मरणोपरांत 'भारत रत्न' से भी नवाजा गया। अरुणा आसफ अली के ग्रन्थ मेमोरीज ऑफ १९४२, एटटीन ईयर्स ऑफ्टर गाँधी, थर्टी ईयर्स ऑफ्टर फ्रीडम, बिहाइंड लिंक हाउस, द न्यू चैलेंजेज विथ द कांग्रेस सर्वाइव आदि में जनजागरण की प्रबलता है। केरल की राष्ट्रवादी साहित्यकार बालमणि अम्मा थी। उन्होंने देशप्रेम की कविताएँ लिखकर क्रांतिकारियों का साहस बढ़ाया। वे मुख्यतः वात्सल्य, ममता एवं कोमल भाव की कवयित्री अवश्य थीं किन्तु देशप्रेम की अनूठी ज्वाला प्रज्वलित करने में भी उनका जवाब नहीं था। आपकी कविताओं में गाँधी दर्शन एवं आजादी की ललक स्पष्ट झलकती है। बालमणि अम्मा को पद्मभूषण जैसे कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। निर्भीक लेखिका हंसा मेहता ने स्वतंत्रता आंदोलन पर अनेक लेख आलेख लिखे। जीवन और लेखन दोनों क्षेत्र में एक साथ उत्कृष्ट कार्य करने वाली थी नयनतारा सहगल। 'फ्रॉम फीवर सेट फ्री प्रिजन एंड चाकलेट केक' जैसी क्रांतिकारी पुस्तकें लिखकर उन्होंने स्वतंत्रता इतिहास का गौरव बढ़ाया। स्वतंत्रता सेनानी, लेखिका एवं स्वतंत्र चिंतन की धनी थीं नयनतारा सहगल। भारतीय जनमानस में स्वतंत्रता की ऊष्ण लौ प्रदीप्त करने वाली अनेकों ऐसी वीरांगनाएँ हैं जिन्होंने अपनी लेखनी में रक्त भरकर क्रांति का मंत्र फूंका। समस्त राष्ट्र एवं नारी जगत इन वीरांगनाओं लेखिकाओं के चरणों में मस्तक झुकाते हुए उन्हें श्रद्धांजली अर्पित करते हुए गर्व महसूस करता है। देश आज फिर ऐसा ही जज्बात, ऐसी ही रवानी चाहता है। इन साहित्य मनीषी वीरांगनाओं को कोटिशः प्रणाम।

शेष पृष्ठ 1 का
आईएसआईएस की कोई बड़ी .....

आईएसआईएस के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की है। यह निश्चित तौर पर चिंता का विषय है कि हमारे क्षेत्र के नजदीक उनकी आमद हो रही है। हुड्डा ने कई युवकों के आतंकवाद से जुड़ने पर भी चिंता जताई। उन्होंने कहा ऐसी खबरें हैं कि पिछले साल हमारे खुफिया आंकड़ों के अनुसार करीब ६० स्थानीय युवक, जिनमें से अधिकतर दक्षिण कश्मीर से हैं और इस साल करीब करीब ३०–३५ युवक आतंकवाद से जुड़े हैं।

दिनांक 19 अगस्त से 25 अगस्त 2015 तक

साप्ताहिक व्रत-पर्व

पर्व	तिथि	दिन
कल्कि जयंती	20 अगस्त	वीरवार
गोस्वामी तुलसीदास जयंती	22 अगस्त	शनिवार
अष्टमी	23 अगस्त	रविवार

यह भी सच है

हम्पी एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक केंद्र भी रहा है

पत्थरों का एक स्वप्नलोक : आपको इतिहास, पुरातत्व व विरासत से लगाव है और ऐतिहासिक स्थलों की यात्रा करने में मजा आता है, तो दक्षिण भारत में हम्पी आपके लिए पसंदीदा डेस्टिनेशन हो सकता है। हम्पी कर्नाटक की तुंगभद्रा नदी के किनारे स्थित एक प्राचीन गौरवशाली साम्राज्य विजयनगर का अवशेष है। प्राचीन स्मारकों का यह केंद्र उत्तरी कर्नाटक के बेल्लारी जिले में बेंगलुरु से करीब ३५३ कि. मी., बेल्लारी से ७४ किमी. और हॉसपेट से १३ किमी. की दूरी पर स्थित अब एक गाँव है। हम्पी को यूनेस्को ने भारत में स्थित विश्व विरासत का दर्जा दिया है। इस गाँव में आज भी विजयनगर साम्राज्य के तमाम अवशेष हैं। इतिहास और पुरातत्व के लिहाज से हम्पी एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है, इसलिए इसके दक्षिण भारत का बेहद लोकप्रिय पर्यटन केंद्र होने में कोई अचरज की बात नहीं है।

गौरवशाली इतिहास : हम्पी को प्राचीन काल में कई नामों से जाना जाता था, जैसे—पम्पा क्षेत्र, भास्कर क्षेत्र, हम्पे, किष्किंधा क्षेत्र आदि। हम्पी का इतिहास काफी पुराना है। हम्पी नाम असल में कन्नड़ शब्द हम्पे से पड़ा है और हम्पे शब्द तुंगभद्रा नदी के प्राचीन नाम पम्पा से आया था। हम्पी का इतिहास तो वैसे काफी प्राचीन है, लेकिन यहाँ विजयनगर साम्राज्य की स्थापना १३३६ में दो भाइयों हरिहर राय और बुक्का राय ने की थी। यह काफी कम समय में ही बेहद संपन्न और धनी राज्य बन गया। यह साम्राज्य कृष्णदेव राय के शासन में अपने चरम पर था। बेहद बुद्धिमान तेनालीराम इन्हीं के दरबार में थे। इस साम्राज्य का विस्तार मौजूदा कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र के इलाकों तक हो गया था। यह अपनी अकूत संपत्ति, कला, साहित्य, संस्कृति, व्यापार के लिए काफी ख्याति हासिल कर चुका था, लेकिन मुगलों के आक्रमण से विजयनगर साम्राज्य नष्ट हो गया और हम्पी भी खंडहर में तब्दील हो गया। बीजापुर, गोलकुंडा, अहमदनगर और बीदर के मुस्लिम राज्यों ने इस राज्य पर धावा बोलने के लिए एक गठजोड़ बना लिया और १५६५ की लड़ाई में विजयनगर साम्राज्य बुरी तरह हार गया। उसके बाद मुगलों की सेनाओं ने इस खूबसूरत शहर को बर्बाद कर दिया। इतिहास व वास्तु के खुले संग्रहालय आज हम्पी के खंडहर इतिहास, वास्तुकला और धर्म के विशाल खुले संग्रहालय जैसे हैं। हम्पी में हर साल करीब १५ लाख पर्यटक आते हैं। हम्पी खासकर अपने वास्तु के लिए काफी मशहूर है। किसी ने सच कहा है कि पत्थरों से यदि कोई सपना बने, वह हम्पी जैसा ही होगा। यह पूरा इलाका स्मारकों और पत्थरों के ढाँचों से भरा हुआ है, जिनमें १४वीं सदी के दौरान कुशल शिल्पियों द्वारा रचे गए वास्तु की जबर्दस्त खूबी दिखती है। हर स्मारक बेहद खूबसूरत दिखता है।

हम्पी को एशिया में सबसे बड़ा खुले स्मारकों वाला गुम हुआ शहर माना जाता है। विजयवाड़ा राज्य की सात कतार में किलेबंदी की गई थी। सबसे अंदर की कतार से हम्पी शहर को घेरा गया था। इसके अवशेषों को देखकर अंदाजा लग जाता है कि आज के ६–७ सौ साल पहले यह शहर कितना भव्य था। यह पूरा इलाका करीब २५ वर्ग किमी. में फैला हुआ था। हम्पी में विजयनगर युग के सैकड़ों स्मारक देखने लायक हैं। हम्पी का इलाका अनगिनत पत्थरों से भरा हुआ है और इन विशाल पत्थरों के बीच एक आख्यान रचा गया है। स्मारकों के अलावा, यहाँ भव्य मंदिर, तहखाने, प्राचीन बाजार, शाही मंच, दरबार, जलाशय आदि देखने लायक हैं। पूरे हम्पी में सिंचाई के लिए नहरों का जाल बिछा हुआ था जो मंदिरों से लेकर महलों तक, टंकियों से लेकर खेतों तक सब जगह से जुड़े हुए थे।

धार्मिक महत्त्व भी कम नहीं : हम्पी एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक केंद्र भी रहा है। मिथकों की बात करें, तो रामायण कथा के अनुसार, भगवान राम और लक्ष्मण जब माँ सीता की तलाश में भटक रहे थे, तो वह किष्किंधा इलाके में वहाँ के शासक वानर भाइयों बाली और सुग्रीव की तलाश में पहुँचे थे। इस इलाके का एक प्रख्यात धार्मिक आकर्षण विरुपाक्ष मंदिर भी है, जो विजयनगर के देवता भगवान विरुपाक्ष को समर्पित है। यहाँ के कम्पा भुपा पथ पर आप ट्रैकिंग भी कर सकते हैं, करीब दो किलोमीटर दूरी तक है। यह ट्रैक रूट हम्पी बाजार से शुरू होकर विट्ठल मंदिर के पास जाकर खत्म होता है। हम्पी में हर साल नवंबर माह में वार्षिक समारोह मनाया जाता है, जिसे हम्पी उत्सव या विजय उत्सव कहते हैं। यहाँ दिवाली का त्योहार भी बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। पूरा हम्पी घूमने के लिए आपको तीन से चार दिन का समय लेकर चलना चाहिए।

कबिरा खड़ा बजार में

किस लड़ाई में फंस गयी दिल्ली

उपराज्यपाल नजीब जंग ने आम आदमी पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल को भारी बहुमत से जीत हासिल करने के बाद मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलवाई थी। यह संवैधानिक तकाजा है और दिल्ली के चुनावी नतीजों के बाद इसका पूरा पालन किया गया। लेकिन यहीं से दिल्ली राज्य व केन्द्र सरकार के बीच फंस गयी। ऐसा लगता है कि इस शपथग्रहण के साथ–साथ ही दिल्ली में संवैधानिक स्थिति, लोकतांत्रिक परंपराओं और शिष्टाचार को तार–तार करने की कसम भी राजनीतिक गलियारों में कहीं चुपके–चुपके खाई गई है। अरविंद केजरीवाल के मुख्यमंत्री बनने के साथ ही दिल्ली में निरंतर संवैधानिक व्यवस्थाओं का हवाला देते हुए निर्वाचित सरकार और उपराज्यपाल के बीच तनातनी की स्थिति बनी हुई है। जो कभी–कभी इतनी अप्रिय और नागवार होने की हद तक पहुंच जाती है कि लगता ही नहीं दो जिम्मेदार पदों पर बैठे लोगों के बीच ऐसी लड़ाई हो रही है, लगता है प्राथमिक स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे हैं जो बैठने की जगह के लिए लड़ाई लड़ रहे हैं। इनके बीच सुलह करा सके, ऐसा निष्पक्ष और भरोसेमंद शिक्षक या प्रधानाचार्य भी दिल्ली में नहीं है। कभी नियुक्तियों तो कभी अन्य अधिकारों को लेकर अरविंद केजरीवाल और नजीब जंग निरंतर एक–दूसरे पर निशाना साधते हैं। ताजा विवाद दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष स्वाति मालीवाल पर उभरा है। केजरीवाल सरकार ने स्वाति मालीवाल को जब से यह पद सौंपा तब से विरोधियों ने इस नियुक्ति पर सवाल उठाने शुरू कर दिए। स्वाति को अरविंद केजरीवाल का रिश्तेदार बताया गया। इस बात से कोई इन्कार नहीं है, स्वाति भी प्रारंभ से आप के आंदोलन से जुड़ी रही हैं और इस नियुक्ति के पूर्व दिल्ली सरकार में मुख्यमंत्री के सलाहकार के रूप में काम कर रही थीं। दिल्ली एक बार फिर संवैधानिक अधिकारों की उलझनों में फंस गई है। अभी दिल्ली सरकार व केंद्र के बीच पुलिस पर अधिकार को लेकर लड़ाई चल ही रही है कि यह एक नया विवाद सामने आ गया है। अरविंद केजरीवाल समेत आम आदमी पार्टी के तमाम नेता जनता के बीच हर विवाद और झगड़े को इस तरीके से ही पेश करते हैं कि लोकतांत्रिक तरीके से चुने जाने के बावजूद केंद्र सरकार उन्हें काम करने नहीं दे रही और अड़चनें लगा रही है। दूसरी ओर केंद्र सरकार व उपराज्यपाल की ओर से यही माहौल बनाया गया है कि केजरीवाल सरकार हर काम मनमानी से कर रही है और संवैधानिक दायरों में नहीं रहना चाहती। अधिकारों को लेकर ऐसी खींचातानी राज्य के लिए खतरनाक है। आम आदमी पार्टी के अधिकतर नेता और मंत्री आंदोलनकारी रह चुके हैं और संघर्ष कर अधिकार प्राप्ति में भरोसा रखते हैं, इसलिए वे हर मसले को आंदोलन की नजर से ही देखते और पेश करते हैं। हक की लड़ाई में किसकी जीत होती है, किसकी हार यह तो वक्त ही बताएगा। केंद्र में भाजपा पूर्ण बहुमत से आई है तो दिल्ली में जनता ने आम आदमी पार्टी को जीत दिलाई। जनता ने अपना फैसला दोनों सरकारों के लिए सुनाया, लेकिन दोनों ही सरकारें जनता की उपेक्षा कर अपने हक और अहंकार की रक्षा में लगी हैं। लोकतंत्र केवल नियमों और संविधान की किताब से नहीं चलता, थोड़ा महत्व परंपराओं का भी होता है। पहले इस हद तक रस्साकशी कभी नहीं चली, अब भी दोनों पक्षों को अपने–अपने तेवर ढीले कर झुकने की मुद्रा में आना चाहिए।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2013-14-15
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 12 अगस्त से 18 अगस्त 2015 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।